RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 अक्टूबर 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 अक्टूबर

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका नवम्बर 2019

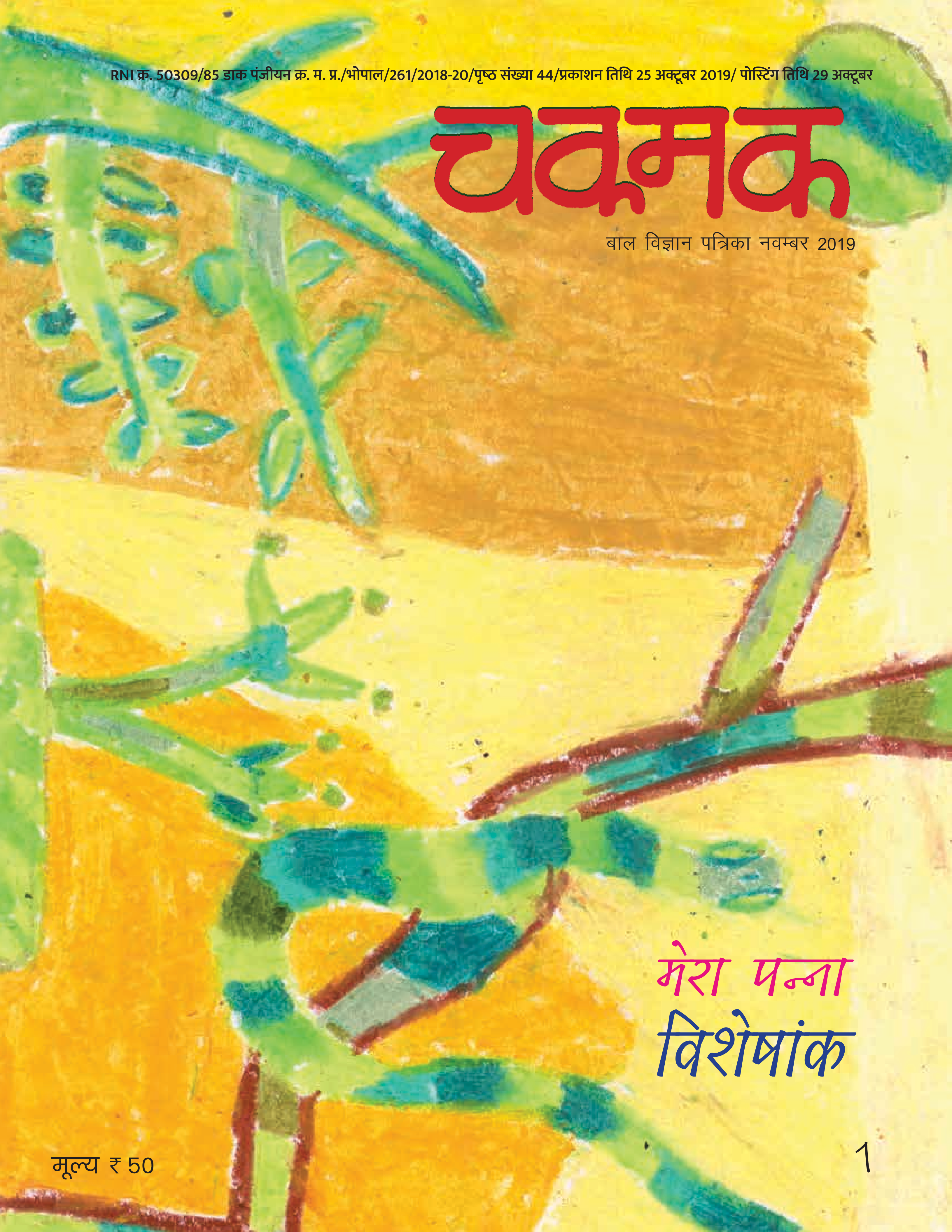

मेरा पन्ना विशेषांक

मूल्य ₹ 50

चित्र पहेली

अंक 398 नवम्बर 2019

चकमक

14 नवम्बर बच्चों का दिन है। तो हमने सोचा कि नवम्बर के अंक में बच्चों की खूब सारी रचनाएँ हों। कहानियाँ, कविताएँ, किस्से, पुस्तक समीक्षा, क्यों-क्यों... पढ़कर हमें बताना कि तुम्हे कैसे लगे।

400-2!

जनवरी का अंक चकमक का 400वा अंक होगा। इस अवसर पर हम एक विशेषांक तैयार कर रहे हैं। तुम भी 400वे अंक के लिए कुछ लिखकर भेजो - आसपास की खबरें, कहानी, कविता, पहेली, किसी दिलचस्प व्यक्ति से तुम्हारी मुलाकात के बारे में, तुमसे बनाई हुई कोई चित्र, खाने की चीज़ या क्राफ्ट...

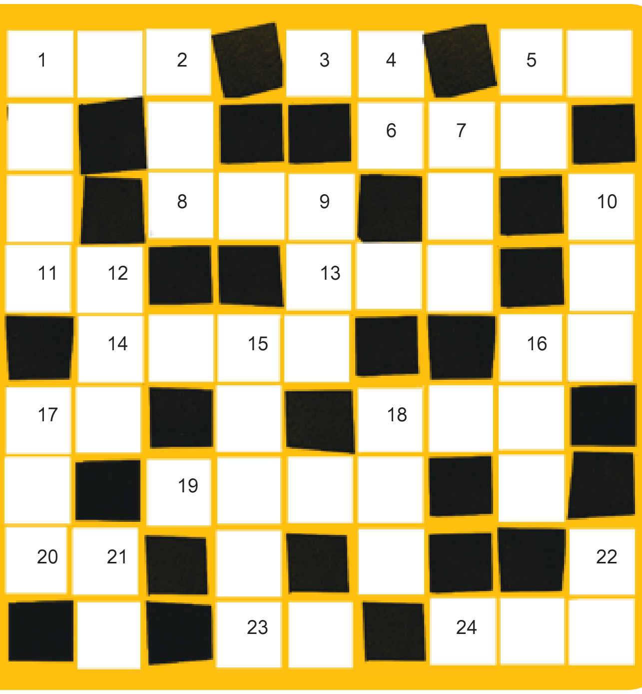

इस बार

चित्रपहेली 2
सतपुड़ा के घने जंगल - भवानीप्रसाद मिश्र 4
चायनीज़ अमरूद - सानिका भालोटिया 6
जंगल जलेबी - रामकरन 7
सुपर 30 के बाल कलाकार 8
भूलभुलैया 12
डर गया - सोनू 13
आओ, मोल से मिलने... - रोहन चक्रवर्ती 14
तुम भी बनाओ - रंग-बिरंगे आर्ट वर्क... 15
खेलूँ क्रिकेट - प्रभात 17
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी 18
हॉर्नबिल का बच्चा - रोहन चक्रवर्ती 21
दोस्त और दुश्मन - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन 22
डरपोक भुरया- निशा जमदाडे 24
विज्ञान शिक्षण में भेदभाव 25
क्यों-क्यों 26
कहानी पूरी करो 29
गणित है मज़ेदार 30
दो प्रेस वाली दुर्गा दीदी - रुचिका 31
कोकड़ाल - प्रीति जगत 32
पुस्तक समीक्षा 34
अन्तर ढूँढो 38
तुम भी जानो 40
माथापच्ची 41
सेम टू सेम - दिविक रमेश 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: ऋषभ, छठवीं, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

सतपुड़ा के घने जंगल

भवानीप्रसाद मिश्र

सतपुड़ा के घने जंगल।
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

झाड़ ऊँचे और नीचे,
चुप खड़े हैं आँख मीचे,
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धँसो इनमें,
धँस न पाती हवा जिनमें,
सतपुड़ा के घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।

अजगरों से भरे जंगल।
अगम, गति से परे जंगल
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े-छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले, बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कम्प से कनकने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

सतपुड़ा के घने जंगल कविता का एक अंश।

चित्र: वीर गुप्ता, नौ वर्ष, साभार: मोटिवेशन - द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: हर्ष रावत, दस वर्ष, पाँचवीं, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा, साभार: मोटिवेशन - द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चायनीज़ अमरूद

सानिका भालोटिया
चित्र: वृषाली जोशी

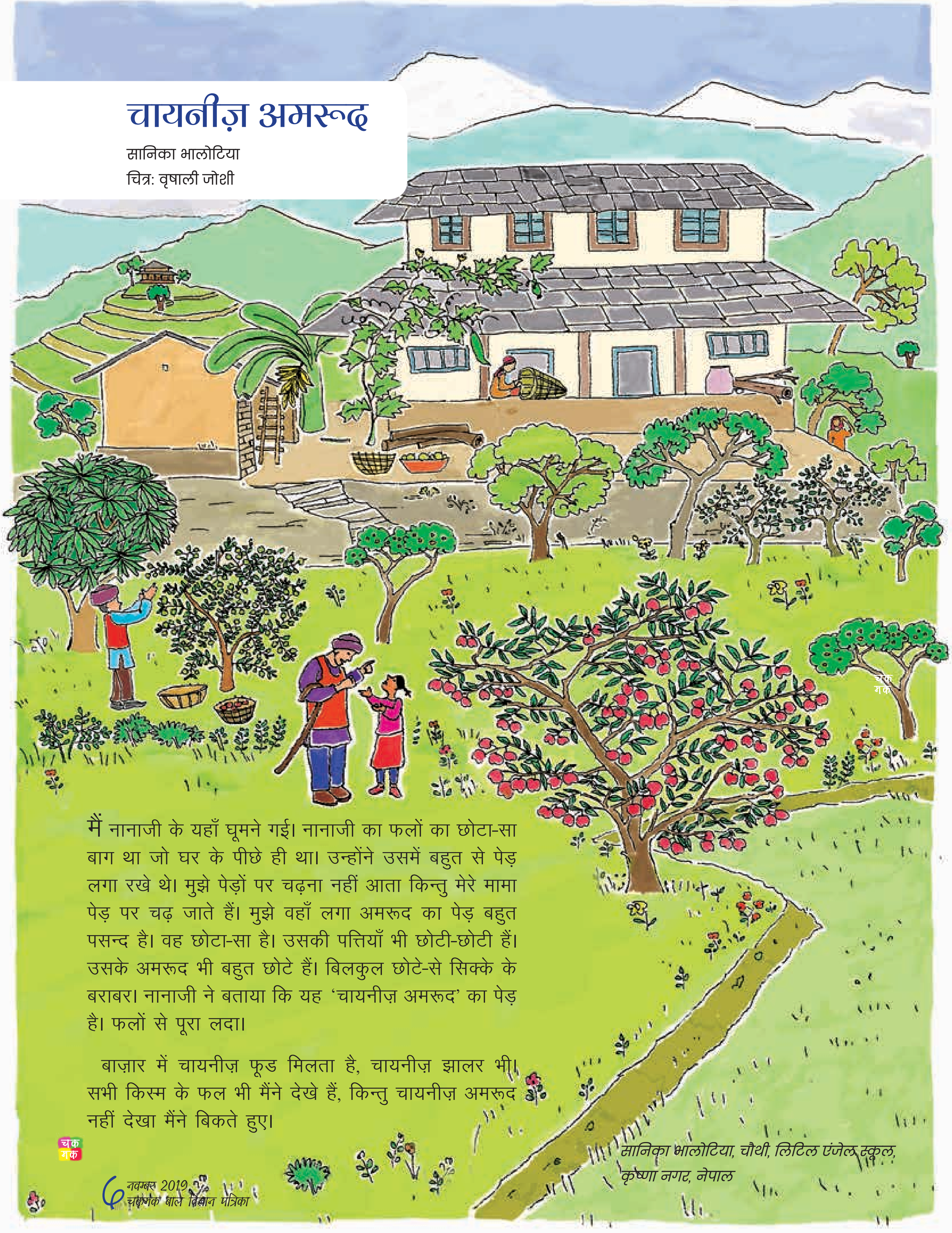

मैं नानाजी के यहाँ घूमने गई। नानाजी का फलों का छोटा-सा बाग था जो घर के पीछे ही था। उन्होंने उसमें बहुत से पेड़ लगा रखे थे। मुझे पेड़ों पर चढ़ना नहीं आता किन्तु मेरे मामा पेड़ पर चढ़ जाते हैं। मुझे वहाँ लगा अमरूद का पेड़ बहुत पसन्द है। वह छोटा-सा है। उसकी पत्तियाँ भी छोटी-छोटी हैं। उसके अमरूद भी बहुत छोटे हैं। बिलकुल छोटे-से सिक्के के बराबर। नानाजी ने बताया कि यह 'चायनीज़ अमरूद' का पेड़ है। फलों से पूरा लदा।

बाज़ार में चायनीज़ फूड मिलता है, चायनीज़ झालर भी। सभी किस्म के फल भी मैंने देखे हैं, किन्तु चायनीज़ अमरूद नहीं देखा मैंने बिकते हुए।

सानिका भालोटिया, चौथी, लिटिल एंजेल स्कूल, कृष्णा नगर, नेपाल

जंगल जलेबी

रामकरन
चित्र: नरगिस शेख़

जंगल जलेबी,
खूब फलेगी।

एक जलेबी,
बकरी लेगी।
एक जलेबी,
खाला को देगी।
पीछे उसको,
भेड़ मिलेगी।

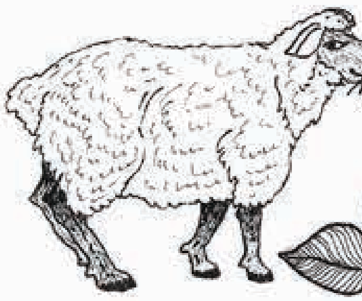

एक जलेबी,
उसको देगी।
मिलकर गपशप,
खूब चलेगी।
जंगल मे छाया,
धूप मिलेगी।

भेड़ कहे - तुम
कम्बल लोगी?
बकरी पूछी -
ठण्ड में दोगी?
फिर दोनों हँसकर,
गले मिलेंगी।

जंगल जलेबी,
खूब फलेगी।

सुपर 30 के बाल कलाकार...

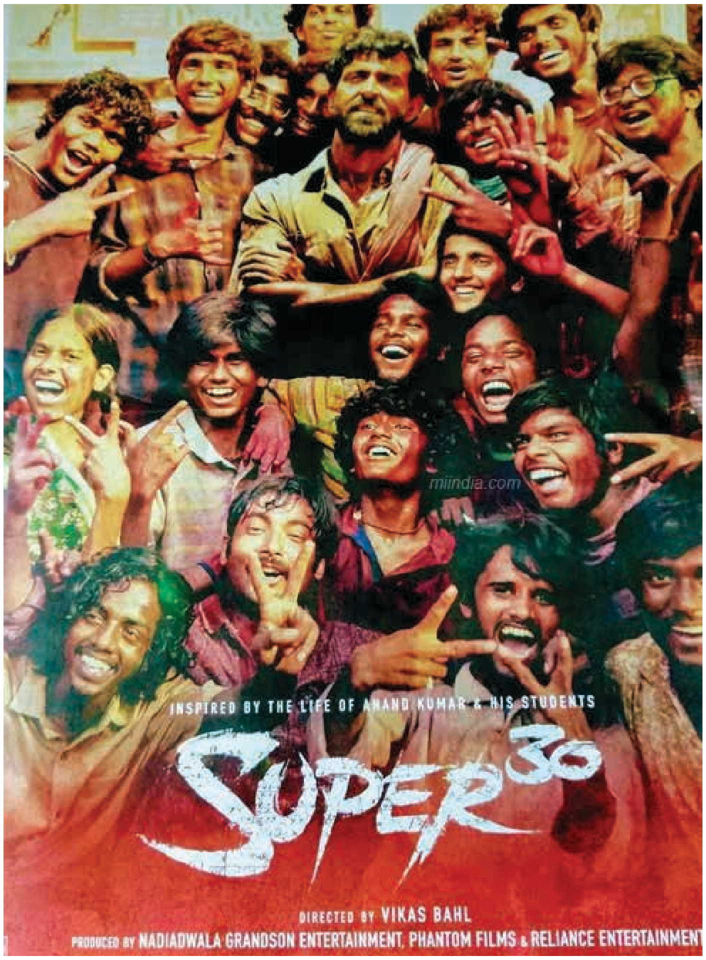

साल 2018 में *सुपर 30* के निर्देशक विकास बहल ने फिल्म के बाल कलाकारों के चयन के लिए कई राज्यों में ऑडिशन ली। ऑडिशन में कुल 30,000 बच्चे शामिल हुए। बिहार में ऑडिशन के लिए उन्होंने बाल भवन किलकारी, पटना को चुना क्योंकि किलकारी के बच्चे पहले भी *मांझी - द माउंटेन मैन, भोंसले, बूचा परीक्षा* जैसी फिल्मों में काम कर चुके हैं। अन्तिम राउण्ड के ऑडिशन में बिहार से 30 बच्चे चुने गए जिनमें से 15 बच्चे किलकारी के थे।

फिल्म बिहार के प्रसिद्ध गणितज्ञ श्री आनन्द कुमार के जीवन पर आधारित है। आनन्द कुमार ने ज़रूरतमन्द और मेधावी बच्चों को आईआईटी की तैयारी कराने के लिए सुपर 30 नामक संस्था की स्थापना की थी।

फिल्म में ये सभी बच्चे आनन्द कुमार यानी ऋतिक रौशन के छात्र बने हैं। ये बच्चे आर्थिक रूप से कमज़ोर व मेहनतकश परिवारों से आए हैं। कोई अपने पिता की भूजा की दुकान में मदद करता है, तो कोई कबाड़ की दुकान में। *सुपर 30* के ऑडिशन से लेकर फिल्म तक का इनका सफर कैसा रहा, चलो इन्हीं से जानते हैं।

"किलकारी में संगीत सीखा। *सुपर 30* में 'बसंती नो डाँस' गाना गाकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि गाना गाते-गाते मैं फिल्मों में काम करूँगा और गाऊँगा भी।"

प्रेम रंजन कुमार

इस फिल्म के दौरान मैंने जाना कि बॉलीवुड में नया करना ज़रूरी है। यहाँ नकल नहीं चलती है। आपको हर वक्त कुछ नया सोचना होता है। मैंने सीखा कि खुद पर काम करते रहना होगा। एक फिल्म में काम करने के बाद फिर शुरू से ही शुरुआत करनी होगी। मुम्बई की दुनिया ने हैरान तो किया पर लौटने के बाद लगा कि नहीं, हमें अभी बहुत मेहनत करने की ज़रूरत है।

"नाटक का अनुभव तो था, पर कैमरे को फेस करना एक अलग ही अनुभव रहा।"

सूरज प्रकाश

मुम्बई में अच्छा लगा। काफी कुछ सीखने को मिला। पहली बार कैमरा फेस किया। यहाँ से सोचकर गए थे कि नाटक जैसा ही होगा। पर ऐसा नहीं था। नाटक में गलती होने पर मंच पर सुधार नहीं कर सकते। पर फिल्म में कई बार री-टेक होता है। भविष्य में भी थियेटर और फिल्म का क्षेत्र ही चुनना है।

"फिल्म मेरी ख्वाहिश है और मुम्बई मेरे सपनों की दुनिया।"

प्रिंस कुमार

ऑडिशन के दौरान मुझे समझ आया कि फिल्म और थियेटर में काफी अन्तर है। यहाँ समय का बहुत महत्व है। आपकी प्लानिंग मज़बूत होनी चाहिए। खूब मेहनत करनी होती है। मुम्बई सपनों की दुनिया जैसी है। फिल्म मेरी ख्वाहिश है। पर अगर कामयाबी न मिली तो वैसे भी री-टेक तो करना ही है।

"*सुपर 30* में काम करते हुए मैंने टीम वर्क सीखा।"

रौशन राज

एक्टिंग का शौक है इसलिए जब भी मौका मिलेगा, तो करूँगा। मुम्बई का अनुभव काफी अच्छा रहा। बाहर हरेक काम व्यवस्थित है। वहाँ से बहुत कुछ सीखा। एक्टिंग के दौरान शूटिंग व्यवस्थित तरीके से होती थी। सिनेमा पूरी तरह से टीम वर्क है।

"जो भी सीखा किलकारी से ही तो सीखा। फिल्म में काम करते समय बड़ी दुनिया देखी। इस फिल्म में काम करना मेरे लिए किसी सपने के सच होने जैसा है।"

नेहा कुमारी

मुम्बई सपनों के शहर जैसा है। ऋतिक रौशन, निर्देशक व साथ के सभी लोग मेहनती और अच्छे थे। भविष्य में एन.सी.सी से जुड़ना है क्योंकि मेरा सपना आर्मी आफिसर बनने का है।

"स्टेज नहीं था। इतने बड़े कैमरे के सामने अभिनय करना था। मैं अवाक रह गया। इतना बड़ा कैमरा देखा भी नहीं था कभी।"

सन्नी कुमार

मुझे पहले भी कई शोज़ में बाहर जाने का मौका मिला है। इस फिल्म के दौरान मैंने जाना कि अभिनय स्टेज पर करना और कैमरे के सामने करना, दोनों बिलकुल अलग हैं। यहाँ मैंने टीम वर्क सीखा, काम के प्रति गम्भीरता सीखी। आगे भी अभिनय की दुनिया में ही जाना है। फिलहाल तो थियेटर कर रहा हूँ।

"अब तक बच्चों की ही दुनिया में नाटक करता था। वहाँ एक बड़ी और बड़ों की दुनिया देखी।"

कृष्णा कुमार

सुपर 30 फिल्म का ऑडिशन अचानक ही मेरी झोली में आ गया। एक दिली ख्वाहिश पूरी हुई। यह एक बड़ा अनुभव था, बहुत बड़ा। बच्चों की दुनिया में तो मैं काम कर रहा था पर अब वहाँ मेरे सामने बड़ों की दुनिया थी। मैंने काम की बारीकियाँ सीखीं। कैमरा फेस करना सीखा। फिल्मों में यथार्थ अभिनय होता है। मेहनत करनी होती है। मैंने भी की और आगे भी करता रहूँगा।

"मुम्बई में पूरी टीम ने सर्पोट किया। मुझे ऐसा नहीं लगा कि मैं अनजान लोगों के साथ हूँ। अभिनय की दुनिया में ही जाऊँगा।"

अमृत राज

मैं बहुत घूमता था। किलकारी आया तो किसी विधा में स्थिर नहीं रहा। फिर 'नमस्कार जी नमस्कार' नाटक देखने के बाद नाटक में रुचि जगी और रेगुलर आने लगा। शूटिंग के लिए मुम्बई गए तो नए शहर ने अचम्भित किया। मुझे वहाँ टीम वर्क सीखने को मिला। भागदौड़ अधिक है पर हर काम व्यवस्थित रूप से होता है। समय की पाबन्दी है।

"इंजीनियर बनने का सपना बचपन में देखा था, पर अब एफ.टी.आई.आई. (भारतीय फिल्म और टेलीविज़न संस्थान) पहुँचना है।"

घनश्याम

मैं बचपन से नाटक करना चाहता था। कई नाटकों में अभिनय भी किया। अब तो नाटक-निर्देशन भी करता हूँ। मुम्बई जाने के बाद अभिनय की दुनिया बहुत बड़ी दिखी। खूब मेहनत की हमने वहाँ। 'ऋतिक रौशन के साथ बातचीत के लम्हें बहुत यादगार रहेंगे।

"फिल्म में काम करना एक सपना पूरा करने जैसा था। जो सीखा था, उसका उपयोग किया।

नवीन कुमार

मैंने नाटक के कई शो में काम किया है। फिल्म में काम करना मेरा सपना था और इस सपने को पूरा किया *सुपर 30* ने। किलकारी में जो भी सीखा, उसका सही उपयोग मैं फिल्मों में कर सकता हूँ। मैं फिल्में बनाना भी चाहता हूँ।

"मुम्बई का जीवन देखा। अपनी पहचान मेहनत करके खुद बनानी होगी।"

विनोद कुमार विश्वकर्मा

चार-पाँच बार के ऑडिशन के बाद *सुपर 30* में मेरा चयन हुआ। मुम्बई जाकर मैंने सीखा कि वहाँ का जीवन कठिन है। अपनी पहचान खुद बनानी पड़ती है। थियेटर में सम्वाद और दर्शक महत्वपूर्ण होते हैं। वहाँ कैमरों के सामने अभिनय करना अलग होता है।

"बनना चाहता था कवि, फिल्मों में काम करने के बाद सोचता हूँ कि अब एक्टर बनूँ। यह काम मुझे पूरी ज़िन्दगी याद रहेगा।"

अश्विनी कुमार

कवि बनना मेरा सपना है। फिल्म के लिए ऑडिशन हुआ तो मैं भी चला गया। मुम्बई सपनों की दुनिया ज़रूर है, पर मेहनत बहुत करनी होती है। पहले अपने पैरों पर खड़ा होना है। फिर सोचना है कि फिल्मों में कैरियर बनाऊँ या लेखक और कवि बनूँ।

"पापा कहते हैं थियेटर में लाइफ नहीं है, पर मैं कहता हूँ इन्तज़ार कीजिए।"

मनीष कुमार

सुपर 30 के लिए 9 बार ऑडिशन दिया, तब जाकर मेरा चयन हुआ। पहली बार फिल्मों का बनना, उनकी शूटिंग देखी। थियेटर और सिनेमा अलग हैं। फिल्म भी एक अच्छा क्षेत्र है काम करने का। इस क्षेत्र को भी काम के लिए चुना जाना चाहिए। बस यहाँ मेहनत बहुत है।

"अभी तो पहला कदम हैं। मैं डाँस सीखती थी। इतने बड़े पर्दे पर काम करने के बाद अभिनय और डाँस में ही कैरियर बनाना चाहती हूँ।"

मानसी

मैं हमेशा से डाँस सीखना चाहती थी। इस फिल्म के कारण मेरा झुकाव थियेटर की ओर हुआ। मुम्बई जाकर लगा कि अलग ही दुनिया में आ गए। मैं एक्टिंग नहीं जानती थी। यहाँ मैंने मूवी के बारे में जाना। रील एक्टिंग व रियल एक्टिंग में फर्क जाना। मेहनत करना बहुत ज़रूरी है। नई सोच ज़रूरी है। आगे अगर मौका मिला तो एक्टिंग करूँगी। डाँस जो सीख रही हूँ उसे आगे लेकर जाना है।

बाल भवन किलकारी, पटना की प्रस्तुति।

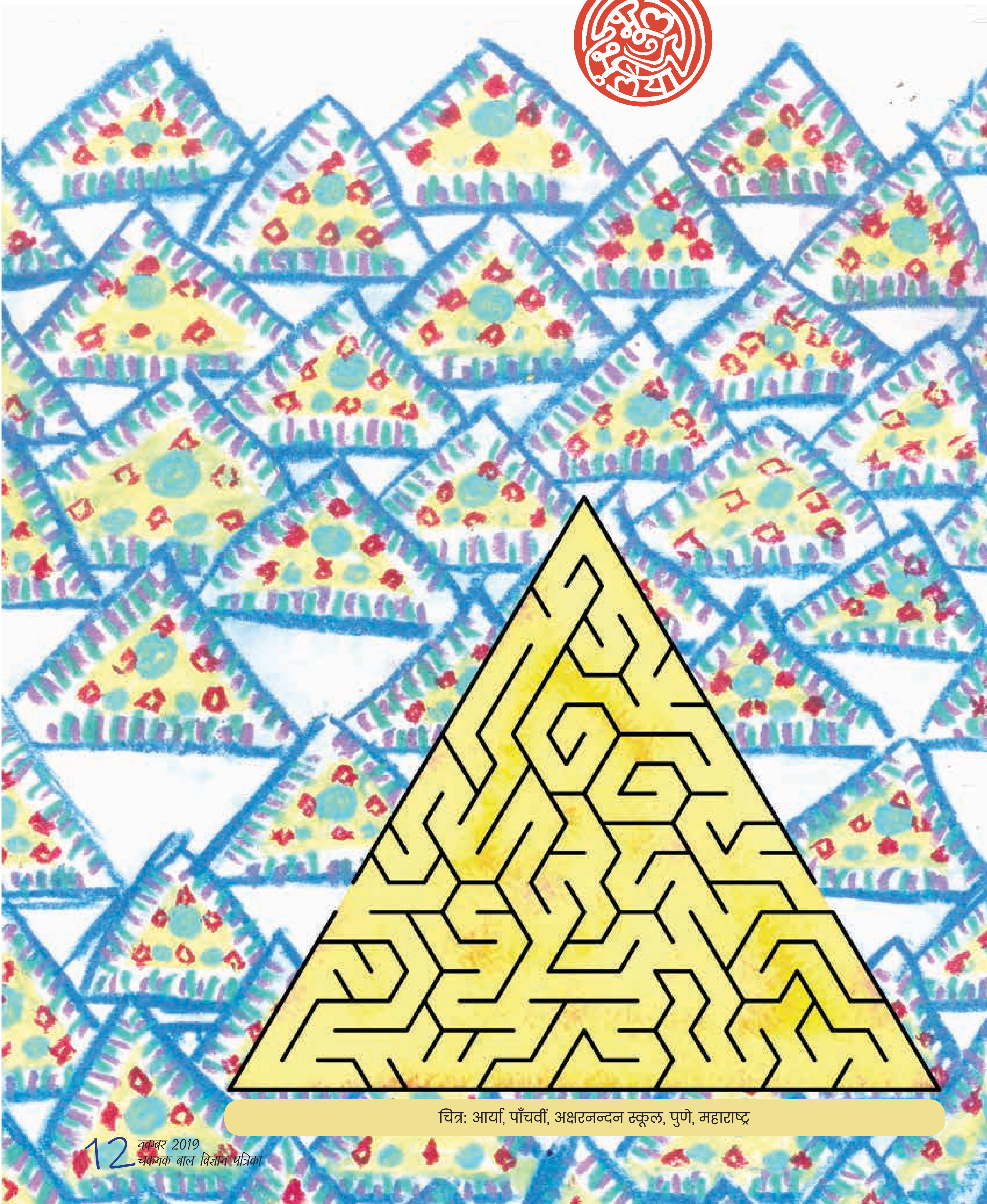

चित्र: आर्या, पाँचवीं, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

डर गया

सोनू

चित्र: अमृता यादव

एक बार मैं साइकिल से खेत पर गया। खेत बहुत दूर था। शाम का समय था। मेरे वहाँ पहुँचते ही साइकिल खराब हो गई। मैं उसे सही करने लगा। तभी अँधेरा हो गया। मैं बहुत डरा हुआ था। मैं वहीं सो गया। पर मुझे डर लग रहा था। तभी एक कुत्ता आया और मेरे कान में चिल्लाकर भाग गया। मैं उसके पीछे भागा। मैं रास्ता भटक गया। फिर न जाने कैसे मैं वापस खेत पर आया। मैंने देखा तो साइकिल वहाँ नहीं थी। मैं और ज़ोर-से डर गया। डर के कारण मेरे साथ अजीब-अजीब चीज़ें होने लगीं। मैं बैठा तो हवा में उड़ने लगा। मैं उठा तो गिरने लगा। तभी मुझे एक आदमी दिखाई दिया। मैं भागकर उसके पास गया। वह बोला, “तुम कौन हो?”

मैं बोला, “मैं हमारे खेत पर आया था, लेकिन साइकिल खराब हो गई। मैं उसे ठीक करने लगा तो रात हो गई तब मुझे आप मिले। कृपया मेरी मदद करो। मुझे मेरे घर तक पहुँचा दो।” मैंने जैसे ही उसकी तरफ देखा तो उस आदमी के सिर नहीं था। मैं यह देखकर इतना डर गया कि वहीं बेहोश हो गया। जब मैं उठा तो घर पर सो रहा था। यह देखकर मैं घबरा गया।

मैंने पापा से पूछा, “मैं यहाँ कैसे आया?”

उन्होंने बताया, “तुम खेत पर बेहोश थे। हमने तुम्हें हर जगह ढूँढा, पर तुम हमें खेत पर बेहोश मिले।”

मैंने पूछा, “मेरी साइकिल कहाँ है?”

मम्मी ने कहा, “तुम साइकिल के पास ही तो मिले थे।”

सोनू, दस वर्ष, समूह-तिरंगा, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

आओ, मोल से मिलने उनके घर चलें...
रोहन चक्रवर्ती
आहा! मेरी नाक मुझे बता रही है कि आज खाने में नूडल्स हैं।
आँखें कमज़ोर हैं तो क्या, नाक तो तेज़ है।
बच्चा लोग, अगर तुम इनके केंचुओं से मिट्टी नहीं निकालोगे, तो तुम्हारे पेट में कीड़े हो जाने हैं।
बाहर निकाल लेना, तब उनका स्वाद लेना।
अरे वाह! ये हुई ना किताब
WORMS OF THE WORLD
A LIFE UNDER GROUND
ANNELIDS
ARTHROPODS
BEETLES-1
खुफिया कमरों वाली भूलभुलैया हवेली।
अरे बाबा! ये तुम लोग का बिस्तर है। खाना ढूँढना बन्द करो।
हमारे घरों के फल-सब्ज़ियों का सूखा कचड़ा, मोल के लिए कचड़ा नहीं है। यह तो उनका घर है।
बार-बार कौन मेहनत करे। अपने ज़हरीले थूक से शिकार को लकवाग्रस्त करके, ज़िंदा रखो। और जब मन करे खा लो!

आटा, कद्दूकस, इमामदस्ता, हल्दी, चुकन्दर, नींबू, गाजर, पालक और जामुन का गूदा।

तुम भी बनाओ

रंग-बिरंगे आर्ट वर्क और खा जाओ!!

गाजर और चुकन्दर को कद्दूकस कर लो। पालक को बारीक- बारीक काट लो। इमामदस्ते में इन तीनों को (अलग-अलग) चटनी की तरह पीस लो।

अब 2-3 चम्मच हल्दी को आधी कटोरी पानी में घोल लो और इसमें आधा नींबू निचोड़ लो। नींबू से हल्दी का रंग थोड़ा चटक पीला हो जाएगा।

अगर तुम्हारे पास जामुन हो तो उसकी गुठली हटाकर उसका पल्प बना लो और उसे पानी में मिला लो।

गाजर, चुकन्दर, पालक, हल्दी, जामुन को आटे में मिलाकर अलग-अलग आटे गूँथ लो। गूँथे हुए आटे नर्म व चिपचिपे नहीं होने चाहिए। आखिर में थोड़ा-सा तेल मिलाकर इन्हें थोड़ा और गूँथ लो।

अपने रंग-बिरंगे आर्ट वर्क बनाने के लिए अब तुम्हारे पास 5 रंगों के आटे तैयार हो जाएँगे।

इन आटों से तुम अलग-अलग आकार व पैटर्न तैयार कर सकते हो। इसके लिए तुम बेलन का इस्तेमाल कर सकते हो या हाथ से भी आकार दे सकते हो।

अलग-अलग रंगों की पट्टियों को गूंथकर के तुम चोटी बना सकते हो या चटाई, कुछ फूल-पत्तियाँ, तितलियाँ या गोल-गोल पूरियाँ।

जब तुम्हारे रंगीन आर्ट वर्क तैयार हो जाएँ तो परिवार के किसी बड़े सदस्य की मदद से गर्म तेल में सावधानी से इन्हें तल लो। तलने पर इनका रंग थोड़ा बदल जाएगा।

अपने दोस्तों व परिवार के लोगों के साथ पार्टी करना! और हमारे लिए उनकी फोटो ज़रूर भेजना।

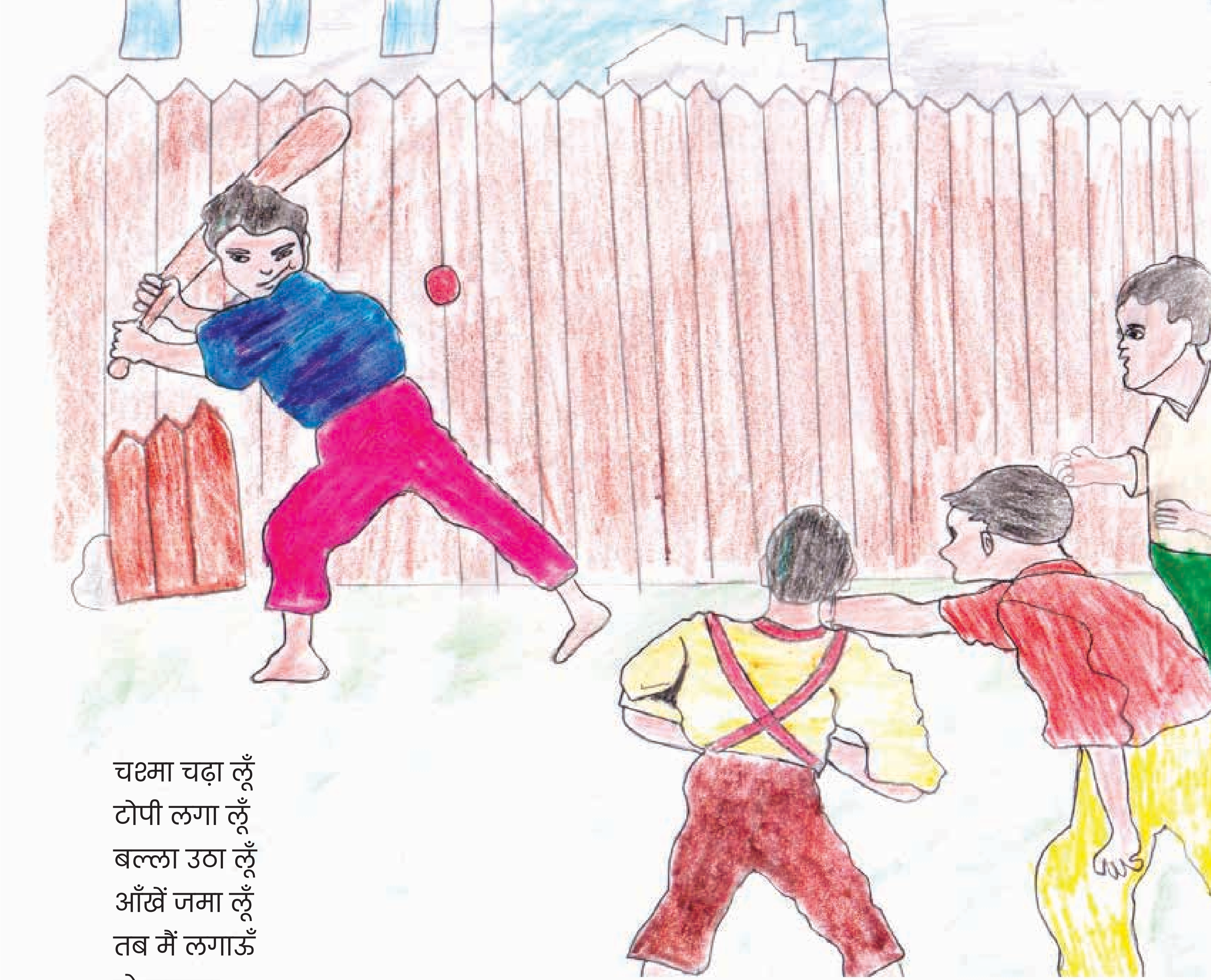

खेलूँ क्रिकेट

प्रभात

चित्र: तुषार भाटिया
सातवीं, अग्रसेन विद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश

चश्मा चढ़ा लूँ
टोपी लगा लूँ
बल्ला उठा लूँ
आँखें जमा लूँ
तब मैं लगाऊँ
वो छक्का
कक्का देख के
रह जाएँ
हक्का-बक्का

बैंटिंग कमाल
बॉलिंग धमाल
फिल्डिंग की दे दूँ
अब मैं मिसाल
कैच लपकूँ पक्का
ओपनर जोड़ी
करती रह जाए
नैन-मटक्का

खेलूँ क्रिकेट
झटकूँ विकेट
मैच जीता रक्खा
आखिरी जोड़ी
करती रह जाए
तक्की-तक्का

अपने सपने को जीना

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :

किट्टू अपने चौदह लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय वह एक ढाबे पर छूट जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात माधव से होती है। जब किट्टू उसे बताता है कि वह खो गया है तो माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है। तब किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी बताता है कि डरकर वह उसे अपने घर ले आता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। लेकिन माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। खजुराहो पहुँचकर परिवार वालों को एहसास होता है कि किट्टू गुम हो गया है। वे उसे ढूँढने वापिस निकलते हैं। माधव भी किट्टू के माता-पिता से सम्पर्क करने की कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता है। मैड का स्केटबोर्ड पर तूफान बना देखकर किट्टू का मन भी स्केटिंग करने का होता है। उसके स्केटबोर्ड पर चढ़ने की कोशिश देखकर मैड दंग रह जाती है और उधर किट्टू का परिवार उसे ढूँढने रैनबसेरा ढाबे पर लौटता है।

अब आगे...

जब किट्टू छह साल का था तो एक बार स्कूल में बुरी तरह गिर पड़ा था। स्कूलवालों को माँ को बुलाना पड़ा था ताकि वे उसे घर ले जाएँ।

जब माँ स्कूल पहुँचीं तो उन्होंने देखा कि किट्टू धार-धार रोए जा रहा था। "बेटा, बहुत ज़्यादा दर्द हो रहा है क्या? चिन्ता मत करो, चोट ठीक हो जाएगी। बस एक बार डॉक्टर देख लें, फिर सब ठीक हो जाएगा।" किट्टू के आँसू पोंछते हुए उन्होंने कहा था। लेकिन जब डॉक्टर के यहाँ की गन्दी स्वाद वाली दवाई भी किट्टू की रुलाई बन्द नहीं करा पाई तो माँ को समझ में आ गया कि बात कुछ और ही है। उन्हें किट्टू के भीतर से सच्चाई को बाहर निकालने में ज़्यादा समय नहीं लगा।

"सब बच्चे मेरे ऊपर हँस रहे थे, उन्होंने मेरे आधे पैर का मज़ाक बनाया। मेरी बैसाखियाँ खींचीं, पहले एक खींची, फिर दोनों।" फफकते हुए उसने माँ को बताया था।

लेकिन माँ के चेहरे पर जैसे फौलादी भाव आ गए थे। "ओह। ये तो बहुत बुरी बात है। फिर क्या हुआ?" माँ ने बेरुखी से पूछा।

"फिर मैं रोने लगा, और क्या?" किट्टू ने उपेक्षा के भाव से कहा।

"और क्या रोने से राहत मिली? मुझे यकीन है नहीं मिली होगी। पक्की बात है कि वो लोग थोड़ा और हँसे होंगे, और हँसते-हँसते वहाँ से चले गए होंगे और तुम रोते ही रह गए होगे।" किट्टू की आँखों में आँखें डालकर माँ बोली थीं। "देखो किट्टू, तुम्हारे पास उनसे एक पैर कम है। उन्हें ये बात अजीब लगती है, तुम्हें नहीं लगती। तुम्हारे लिए तो ये बिलकुल स्वाभाविक है। इसलिए वो लोग क्या कहते हैं इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। महत्वपूर्ण बात ये है कि तुम ऐसे में क्या करते हो।"

रैन बसेरा ढाबे में, किट्टू के परिवार को चुप कराने के बाद रंजीत चौधरी नरम पड़ गया था। उसके मन में इती फुई के लिए असीम प्रशंसा का भाव पैदा हो गया था क्योंकि इती फुई की ज़बान भी वैसी ही तीखी थी जैसी खुद उसकी।

"चलो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने इती फुई से कहा जो सबसे ज़ोर-से विलाप कर रही थीं। माँ इतनी

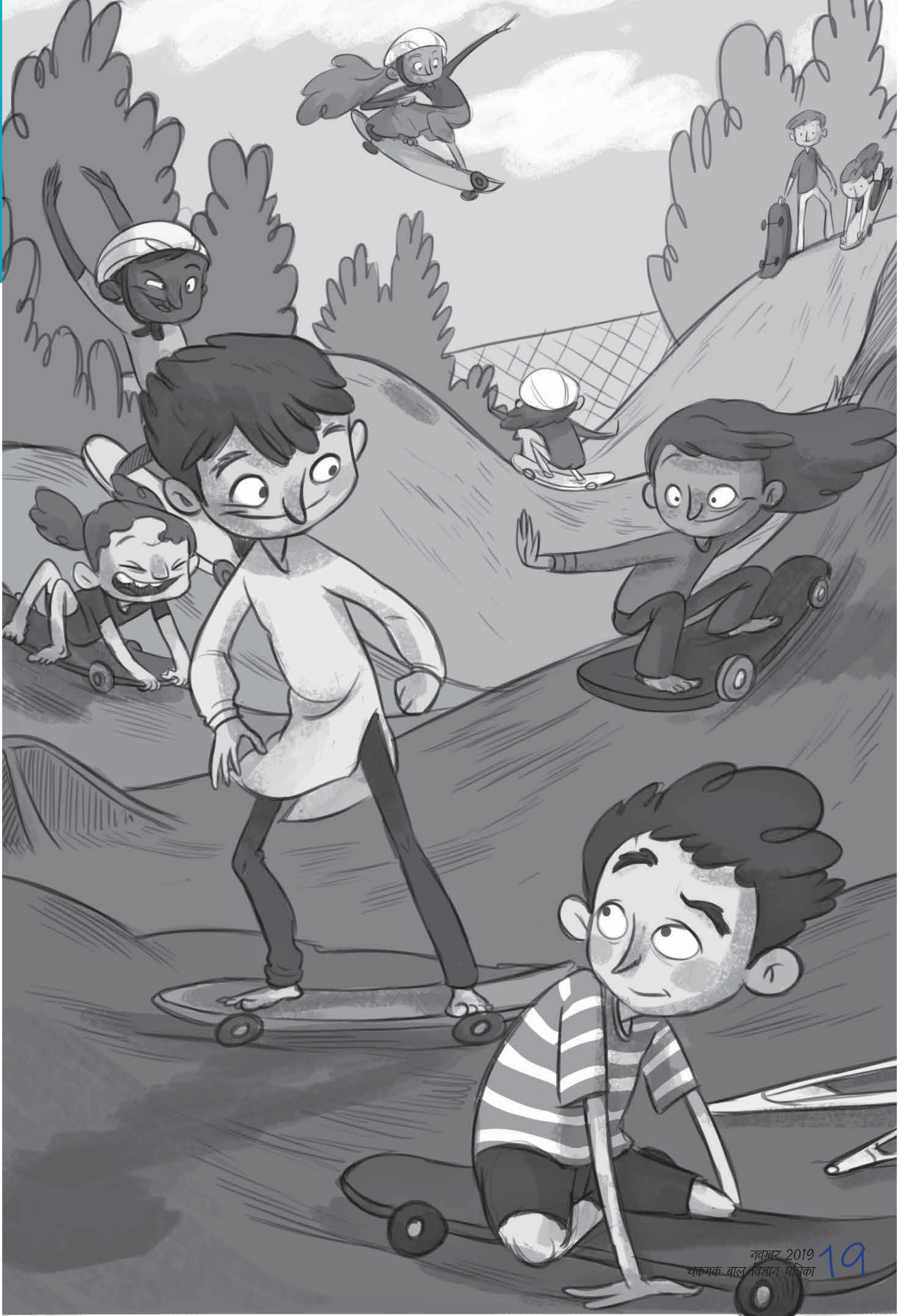

घबरा गई थीं कि उनसे कुछ बोलते ही नहीं बन रहा था, और पप्पा अभी इसी सोच-विचार में लगे हुए थे कि आखिर क्या हुआ होगा।

"हमें पुलिस के पास जाकर उनसे मदद लेना चाहिए," रंजीत ने पप्पा से कहा। "कहीं से तो शुरुआत करनी पड़ेगी!"

उसने किक मारकर अपनी बाइक चालू की। पप्पा उसकी पिछली वाली सीट पर किसी तरह लद गए। पन्ना पुलिस स्टेशन वहाँ से काफी दूर था, और सूरज डूबने लगा था।

मैड के इर्द-गिर्द कुछ बच्चे इकट्ठा हो गए थे, और किट्टू को स्केटबोर्ड की सवारी करते देख वो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर और ताली बजाकर उसका उत्साह बढ़ा रहे थे। किट्टू को तो रुकने का मन ही नहीं हो रहा था, लेकिन आज के लिए उसके हाथ काफी काम कर चुके थे, और अँधेरा भी घिर रहा था।

आखिरकार, जब किट्टू मैड और उसके दोस्तों के पास आकर रुका, तो उन सब ने मुस्कराते चेहरों और तालियों के साथ उसका अभिवादन किया। और हाँ, मैड ने तो सीटी भी बजाई।

जब बाकी बच्चे अपने-अपने स्केटबोर्ड लेकर, कुछ समतल फर्श पर तो कुछ रैंप पर, स्केटिंग करने लगे तो किट्टू मैड की तरफ मुड़ा और दिखावटी आश्चर्य करते हुए बोला, "मुझे नहीं पता था कि तुम्हें सीटी बजानी भी आती है!"

"तुम्हें बहुत-सी बातें नहीं पता हैं। अभी आधा घण्टे पहले तक क्या तुम्हें पता था कि तुम स्केटबोर्डिंग भी कर सकते हो?" मैड ने हँसते हुए कहा। "और उसके पहले तुम्हें ये भी नहीं पता था कि तुम स्केटबोर्डिंग के जन्नत, मशहूर जनवार कैसल में हो। और ये भी कि हमारा ये छोटा-सा गाँव स्केटबोर्डिंग करने वालों के बीच देश भर में मशहूर है!"

"तुम्हें इसे सही तरीके से करके देखना चाहिए। करके देखते क्यों नहीं?" पीछे से एक आवाज़ आई। ऊँचे कद की वो महिला निश्चित ही कोई विदेशी थी।

आवाज़ सुनकर मैड ने चीखकर कहा, "स्केटिंग आंटी! ये किट्टू है। किट्टू तुमने देखा ये स्केट पार्क कितना बड़ा है? तुम्हें आश्चर्य नहीं हुआ कि पार्क यहाँ बना कैसे?" फिर स्केटिंग आंटी की तरफ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी, "क्या आप इसको देख रही थीं? क्या आपने इसको स्केटबोर्ड चलाते देखा? ये बढ़िया चलाता है ना?"

किट्टू ने अभी तक तो इस बात पर गौर नहीं किया था लेकिन मैड के भीतर अपनी माँ के गुण कूट-कूटकर भरे थे।

"हाँ, हाँ, मेरी बच्ची! मैं इसे देख रही थी। इसीलिए तो मैंने पूछा कि ये सही तरह से क्यों नहीं कर रहा है। खड़े होकर।" किट्टू की तरफ मुड़कर सीधे उसकी आँखों में आँखें डालकर उस महिला ने पूछा।

किट्टू अपने सामने आई चुनौती को अच्छी तरह समझ लेता था। उसे ये समझ में नहीं आ रहा था कि वो इस चुनौती को पूरा कर पाएगा कि नहीं।

पप्पा को याद नहीं आ रहा था कि उन्हें इतने निष्क्रिय और उदासीन लोग पिछली बार कब मिले थे। पन्ना पुलिस स्टेशन के पुलिसवाले इतने उदासीन थे कि उन्हें देखकर हँसते-खिलखिलाते चेहरे भी मुरझा जाएँ।

"इनका बेटा खो गया है साब। आप बताओ हमें क्या करना चाहिए?" मामले को थोड़ा आगे बढ़ाने के लिए रंजीत ने कहा।

"कल सुबह आना। हो सकता है वो रात में लौट आए। वैसे भी, अब बहुत देर हो गई है। हम अब अपनी रात की गश्त पर निकलने वाले हैं, क्योंकि हमें देखना पड़ता है कि पन्ना के लोग सुरक्षित हैं या नहीं, समझे?" एक सिपाही ने शायद मदद करने के इरादे से कहा।

उस रात वहाँ किसी का कोई कार्यवाही करने का मन नहीं था।

"देखो परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे यकीन है कि आपका बेटा सुरक्षित होगा। आज रात आराम कर लो, और कल सुबह हम फिर से पुलिस स्टेशन चलेंगे। हालाँकि आप बहुत सारे लोग हो, लेकिन फिर भी मेरे ढाबे में रुक सकते हो।" रंजीत ने पप्पा से कहा, जो अब घबराने लगे थे।

"नहीं, आप समझ नहीं रहे। मैंने उसका खयाल नहीं

रखा। मुझे उसका हाथ पकड़े रहना चाहिए था। वो अपना खयाल कैसे रखेगा? वो तो ठीक से चल भी नहीं सकता। बैसाखियों के सहारे चलता है, और अभी इतना छोटा है...” पप्पा की आवाज़ धीमी पड़ती गई और वो रो पड़े।

पप्पा ने अपने बेटे का बचपन सही मायनों में देखा ही नहीं था। और अब उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि वो अपने बेटे को शायद कभी देख ही न पाएँ।

उधर झोंपड़ी के भीतर अपने तीन नए परिचितों के साथ किट्टू एक सुन्दर सपने में खोया हुआ था। ऐसा सपना जिसमें पहिए थे, ऐसा सपना जिसमें किट्टू के पंख थे। पैर की किसको पड़ी थी?

जारी...

हॉर्नबिल का बच्चा

रोहन चक्रवर्ती

दोस्त और दुश्मन

एक-दूसरे की मदद

जानते हो कुछ चींटियाँ छोटे-छोटे कीटों को पालती हैं जो पौधों के तनों के रस से 'हनीड्यू' नामक एक मीठा रस बनाती हैं। चींटियों को हनीड्यू बेहद पसन्द है। इसके बदले में चींटियाँ इन कीटों (एफिड, स्केली इन्सेक्ट और मीलीबग) को परभक्षी भृंग (बीटल) और लीफ कीटों से बचाती हैं। मसलन ये चींटियाँ इन छोटे कीटों को कुछ ऐसे ही पालती हैं जैसे मनुष्य दूध के लिए मवेशियों को पालते हैं!

इसी तरह अन्य पौधे और जानवर, पौधे और फफूँद, पौधे व अन्य पौधे और यहाँ तक कि कुछ जानवर और फफूँद भी एक-दूसरे से ऐसा रिश्ता बना लेते हैं, जिससे दोनों का फायदा हो। लेकिन ये रिश्ते हमेशा दोनों के लिए फायदेमन्द नहीं होते। कभी-कभी किसी एक को नुकसान हो जाता है, उसे मार भी दिया जाता है। उदाहरण के लिए जब दो पौधे सूरज की रोशनी के लिए एक-दूसरे का मुकाबला करते हैं, या जब कोई पौधा किसी जानवर का भोजन बन जाता है।

nature conservation foundation
science for conservation

गुड़हल प्रतियोगिता के विजताओं के नाम पेज 43 पर दिए गए हैं।

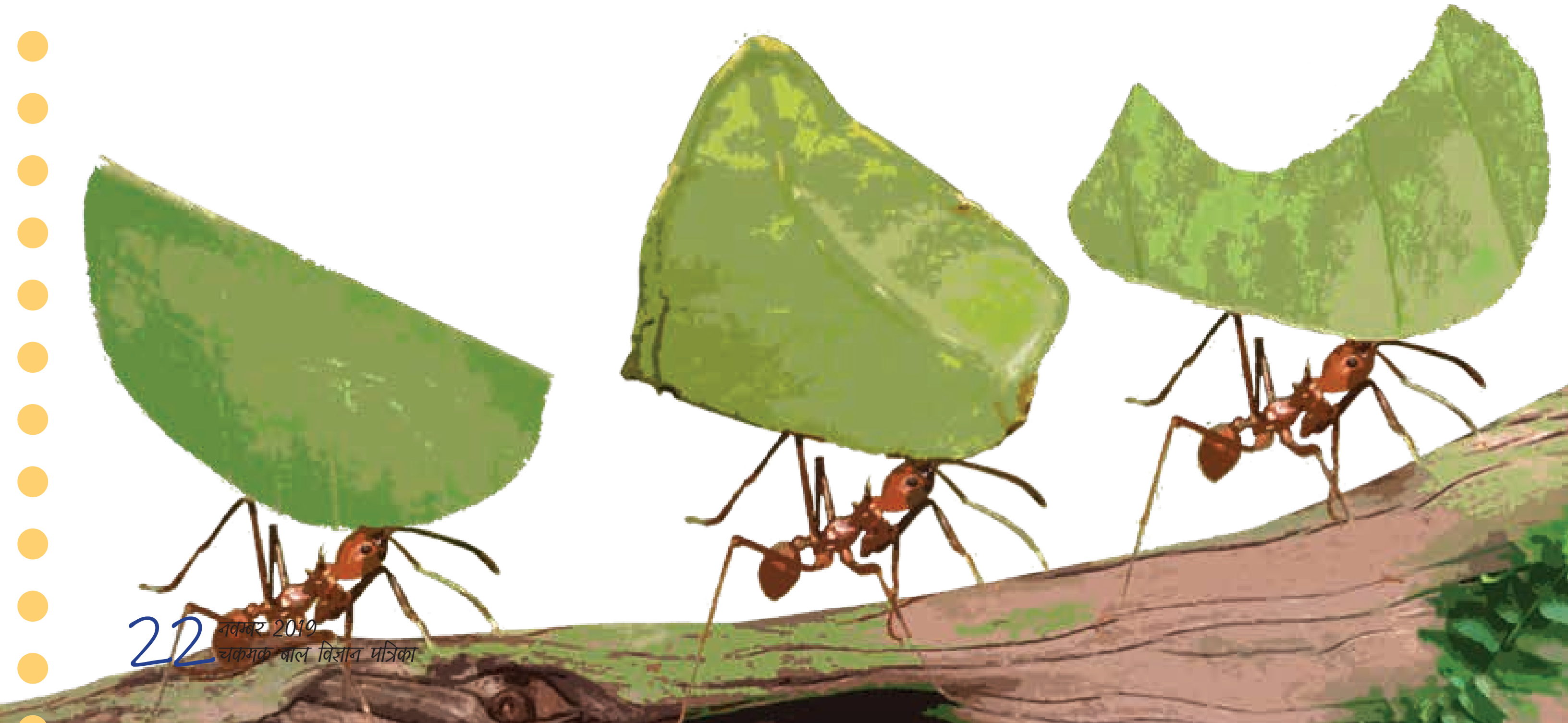

धोखेबाज़ों से मिलो

तुम्हें यह पता ही होगा कि कई कीट और पक्षी फूलों का रस/मकरन्द (नैक्टर) पीते हैं। एक फूल से दूसरे फूल जाते-जाते वे परागकण (पोलेन) अपने साथ ले जाते हैं। फूलों से फलों के बनने के लिए ये परागकण ज़रूरी हैं। इस सम्बन्ध को समझने का नज़रिया यह भी है कि परागकण को दूसरे फूलों तक पहुँचाने के लिए फूल इन जानवरों को मीठे रस का ईनाम देते हैं।

लेकिन जानवर कभी-कभी फूलों को धोखा दे देते हैं खासकर उन फूलों को जिनके मकरन्द तक वे पहुँच नहीं पाते हैं। वे बाहर से ही फूल के निचले हिस्से में छेद बनाकर उसका रस पी जाते हैं। इस तरह वे फूल को चोट तो पहुँचाते हैं, पर चूँकि वे फूल के अन्दर नहीं जाते हैं इसलिए दूसरे फूलों तक अपने साथ परागकण भी नहीं ले जाते हैं।

प्राकृतिक दुनिया के कुछ अन्य धोखेबाज़ों के बारे में तुम सोच सकते हो?

फील्ड डायरी के लिए

चलो एक सूची बनाते हैं उन सब अलग-अलग किस्म के रिश्तों की जिससे जीव आपस में जुड़ते हैं-

- मोहल्ले के किसी शान्त हरे-भरे इलाके, बगीचे या पार्क में टहलने जाओ।
- बाहर कहीं या घर लौटकर आराम से एक जगह बैठ जाओ। अपनी डायरी में तीन कॉलम बनाओ।
- पहले कॉलम में किन्हीं तीन ऐसे जानवरों के नाम लिखो जिन्हें तुमने अपनी सैर पर देखा था।
- दूसरे कॉलम में पौधों के उन हिस्सों के नाम लिखो जिनमें तुम्हें लगता है कि इन जानवरों की रुचि थी - पत्ते, फूल, फल, तना या फिर पूरा पौधा? पौधों के इन हिस्सों का ये जानवर क्या करते हैं?
- अगर तुम्हें लगता है कि ये जानवर उन पौधों का कोई फायदा करते हैं तो उसे तीसरे कॉलम में लिखो।
- जानवरों और पौधों के बीच कितने किस्म के रिश्तों को तुमने गिना? क्या सिर्फ जानवरों को पौधों से कुछ फायदा मिला या फिर पौधों को भी जानवरों से कुछ फायदा मिला?

प्रतियोगिता

फील्ड डायरी के अपने नोट्स हमें भेजना। chakmak@eklavya.in पर जानवरों और पौधों के बीच रिश्तों की सूची हमें भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ। साथ ही हमें बताना कि पौधों के साथ तुम्हारे कितने अलग-अलग नाते हैं।

अनुवाद : विनता विश्वनाथन

डरपोक भुर्या

निशा जमदाडे
चित्र: योहन, आठ साल, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरु, कर्नाटका

रोहित दिखने में बड़ा सुन्दर था। सफेद रंग होने से सब उसे भुर्या कहते थे। उसकी सुन्दरता की वजह से उसे नाटक में हिरोइन का रोल मिला था। पढ़ाई में वो होशियार था। लेकिन वो बड़ा ही डरपोक था। साँप, छिपकली, बिच्छू, गाय, बैल, कुत्ते से तो डरता ही था लेकिन बिल्ली, मुर्गी, तोता, मकड़ी, चींटी से भी डरता था। सब उसे डरपोक डल्ल्या कहकर चिढ़ाते थे।

एक दिन कक्षा में उसके बक्से पर छिपकली गिर पड़ी। भुर्या ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। इधर-उधर भागने लगा। रोने लगा। हम लोगों ने छिपकली को मार डाला। भुर्या को दिखाया। फिर भी भुर्या बस्ते को हाथ लगाने से डर रहा था। पाठशाला की छुट्टी हो गई। भुर्या की माँ आकर उसका बस्ता ले गईं।

दो दिन भुर्या पाठशाला नहीं आया। छिपकली के डर से उसने स्कूल छोड़ दिया। उसे मनाने सब लोग गए। टीचर, सर, शाला व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष, केन्द्र-प्रमुख सब गए। पर भुर्या पाठशाला आने को तैयार नहीं था।

भुर्या का डर निकालने के सिवाय अब कोई चारा नहीं था।

टीचर ने भुर्या से कहा कि हम पेड़ के नीचे बैठेंगे। कक्षा में नहीं जाएँगे। अब तो स्कूल चल?

भुर्या मान गया। उसे नया बस्ता टीचर ने दिलवाया।। टीचर रोज़ मोबाइल पर नए-नए जानवर, पंछी का वीडियो दिखातीं। सफेद मोर, सफेद शेर, सुन्दर-सुन्दर पंछी। बहुत मज़ा आता था। अरे वाह! ये कितना सुन्दर है। मुझे ये पसन्द है, मुझे वो पसन्द है। हम सब चिल्लाते। भुर्या भी हम लोगो में धीरे-धीरे शामिल होने लगा। उसे रंगीन तोता पसन्द है ऐसा उसने टीचर से कहा।

सुन्दर-सुन्दर कुत्ते, बिल्ली, बन्दर इन्सानों के साथ कैसे मज़े से पेश आते हैं ये हम देखते थे। हमें गाँव के कुत्ते-बिल्ली उनके सामने कैसे तो भी लगते थे।

वीडियो में जानवरों का प्यारा-सा बर्ताव देखकर हम सबको जानवर, पंछी अच्छे लगने लगे। घर की मुर्गी काटने देने के लिए अब मन नहीं होता था। भुर्या को बिल्लियाँ पसन्द आईं, पर मोबाइल वाली।

उसका डर थोड़ा-सा कम हुआ। अब वो चीखता, चिल्लाता, स्कूल छोड़कर भागता नहीं है।

मुझे सफेद मोर पसन्द आया था।

निशा जमदाडे, पाँचवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल, गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

विज्ञान शिक्षण में भेदभाव

ऑस्ट्रेलिया में किए गए एक अध्ययन के अनुसार शिक्षकों में विज्ञान शिक्षण को लेकर भेदभाव का रवैया देखा गया है। यह अध्ययन उस सामाजिक रवैये को रेखांकित करता है जो लड़कियों को विज्ञान अध्ययन से दूर करता है। यह इस बात से साबित होता है कि भौतिकी के नोबेल पुरस्कार के 117 वर्ष के इतिहास में अभी तक केवल 3 महिलाओं को ही यह पुरस्कार मिला है।

डॉ. कैरोल नेवाल ने अध्ययन में पाया कि वयस्क दरअसल बच्चों में आठ साल की उम्र से ही भेदभाव करने लगते हैं और लड़कियों में भौतिकी विषय को लेकर उन्हें उम्मीद कम रहती है। 80 प्रशिक्षु शिक्षकों (ट्रैनी टीचर) और मनोविज्ञान में स्नातकों से आठ साल के बच्चों के एक काल्पनिक प्रोफाइल के आधार पर उनकी शैक्षणिक क्षमता का मूल्यांकन करने को कहा गया। इसमें उन्होंने कई प्रोफाइल शामिल किए थे – ऐसी लड़कियाँ जो गुड़ियों से खेलती हैं, ऐसे लड़के जो क्रिकेट खेलते हैं और कुछ ऐसे बच्चे जिनका जेंडर उनके प्रोफाइल में स्पष्ट नहीं होता था और तैराकी पसन्द करते थे।

प्रशिक्षु शिक्षकों से इन काल्पनिक बच्चों को स्काइप पर विज्ञान सिखाने के लिए भी कहा गया। जब उन्हें पता होता कि वे किसी लड़की को पढ़ा रहे हैं, तब वे कम वैज्ञानिक शब्दावली का उपयोग करते थे। लड़कियों को पढ़ाने के मामले में अधिकांश प्रतिभागियों का ऐसा मानना था कि भौतिकी में उनका प्रदर्शन अच्छा रहने या उन्हें भौतिकी में रुचि होने की सम्भावना कम है। यदि वह कोई रूढ़िगत लड़की होती, तो वे मान लेते थे उसकी किसी भी विज्ञान में रुचि रखने की सम्भावना कम है। यह मुमकिन है कि वे अपने पूर्वाग्रह से अनजान थे, लेकिन उन्हें यह जानकर आश्चर्य होता कि उन्होंने लड़कियों और लड़कों को अलग-अलग तरीके से पढ़ाया।

स्कूलों की परिस्थिति भी इस अध्ययन की पुष्टि करती है। ऑस्ट्रेलिया में हाई स्कूल के अन्तिम वर्ष में सात प्रतिशत लड़कियाँ और 23.5 प्रतिशत लड़के भौतिकी पढ़ते हैं। ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में भी यही स्थिति है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में भौतिकी के शिक्षकों और प्रयोगशालाओं में शोधकर्ताओं के रूप में भी महिलाओं की संख्या कम होती है। आम तौर पर महिला भौतिकविदों की वरिष्ठता भी कम होती है और आय भी। हमारे देश में भी स्थिति कुछ ऐसी ही है।

इस स्थिति को बदलने के कई तरीके हमें अपनाने होंगे। लड़कियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग व गणित छात्रवृत्ति वगैरह में निवेश के साथ-साथ सांस्कृतिक बदलाव भी ज़रूरी होगा। यानी कि हम सबको लड़कियों की काबिलियत को कम न समझकर उनके प्रति अपनी सोच, अपना व्यवहार बदलना होगा।

स्रोत फीचर्स से साभार

चित्र: सोनास्ती, प्रोत्साहन केन्द्र, दिल्ली

क्यों-क्यों?

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था कि

यदि तुम अपने स्कूल का कोई एक नियम बदल सकते तो कौन-सा नियम बदलते, और क्यों?

पहली से बारहवीं कक्षा तक के बच्चों ने हमें अपने मज़ेदार जवाब भेजे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें लिख भेजना।

मेरे स्कूल में किसी भी क्लास में बैठने के लिए सीट नहीं है। इसलिए हम लोगों को ज़मीन पर ही बैठकर पढ़ना पड़ता है। मैट भी बहुत बार गीला या गन्दा हो जाता है। अच्छा होता कि सभी क्लास में सीट होतीं।

दीपक यादव, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धुसाह प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं अपने स्कूल का समय बदलना चाहती हूँ। हमारे स्कूल का समय सुबह 6:45 है जिसकी वजह से कई सारे बच्चे सोते-सोते ही आ जाते हैं। मेरी सहेली एक दिन उलटी कमीज़ पहनकर आ गई थी और पूरे दिन सोती रही। सभी बच्चों ने उसका मज़ाक बनाया।

अंजलि, सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली

हमारे स्कूल का नियम है कि हमारे स्कूल में शनिवार को 4:20 या 4:10 में छुट्टी होती है। मैं यह नियम बदलना चाहता हूँ। शनिवार को 12 या 1 बजे छुट्टी होनी चाहिए क्योंकि सबके स्कूल में शनिवार को 12 बजे छुट्टी हो जाती है। और अगर हमारी छुट्टी जल्दी हो जाए तो घर तरफ के दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करने में मज़ा आता है।

त्रिलोक कुमार निषाद, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मुझे अपने स्कूल की प्रार्थना ध्यान से नहीं करना है क्योंकि मुझे प्रार्थना में हाथ जोड़ना अच्छा नहीं लगता। मैं यह नियम बदलना चाहती हूँ।

अवनि, दूसरी 'सी', द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

जब हमारी तासिका चालू होती है तब हमें अपने दोस्तों से बात नहीं करना चाहिए, यह नियम हम बदलना चाहते हैं। क्योंकि हमें अपने दोस्तों को बहुत सारी अलग घटनाएँ बतानी होती हैं। जब तासिका चालू होती है तब हम वो घटना दोस्त को बताते हैं तो शिक्षक डाँटते हैं तो हमें बुरा लगता है। हमें ऐसा नियम चाहिए कि हर तासिका में हमें 5 मिनट गप्पें लड़ाने के लिए या फिर हैंगमैन खेलने के लिए मिलने चाहिए।

अनाम, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे स्कूल के सारे नियम अच्छे लगते हैं व मैं किसी भी नियम को बदलना नहीं चाहती हूँ। क्योंकि स्कूल में जो नियम बनाए जाते हैं वो हमारे अच्छे के लिए ही बनाए जाते हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि अगर खाना खाते समय बच्चों की भीड़ कर देंगे तो किसी भी बच्चे को चोट लग सकती है। इसलिए स्कूल में नियम रखना चाहिए।

अर्पिता सरकार, सातवीं 'ए', अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मैं ये नियम बदलूँगी कि लड़के और लड़की दोनों को एक ही स्कूल में पढ़ने का मौका दूँगी क्योंकि जिन स्कूलों में लड़का और लड़की साथ में पढ़ते हैं तो वहाँ पर लड़के और लड़की दोनों एक-दूसरे को समझते हैं। एक-दूसरे की मदद करते है।। इससे जो छेड़छाड़ होती है वो भी कम होगी। जिन स्कूलों में लड़का-लड़की साथ नहीं पढ़ते उन स्कूलों में छेड़छाड़ बहुत होती है और लड़के पहले ही स्कूल के गेट पर आकर खड़े हो जाते हैं लड़कियों को छेड़ने के लिए।

आशिया, वेलकम सेंटर, निरन्तर संस्था, दिल्ली

क्यों-क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों?

वाह! वाह! इस तरह के सवाल मिलते रहें तो मज़ा आ जाएगा। वैसे मेरा स्कूल नॉर्मल टाइप है तो नियम भी कम हैं, लेकिन हॉली-डे होमवर्क। उफ्फ! हॉली-डे की तो वाट लग जाती है।

अब देखो दीपावली आने वाली है। जितने दिन की छुट्टियाँ नहीं उतना तो हॉली-डे होमवर्क। बेवजह के प्रोजेक्ट, प्रैक्टिकल। मेरी दीवाली तो इसी टेंशन में बीतने वाली है कि अरे हॉली-डे होमवर्क भी तो बनाना है।

टीचर हमसे इतनी मेहनत करवाते हैं और खुद बस एक टिक लगाकर छोड़ देते हैं और फिर कई दिनों तक हमारी मेहनत स्टॉक रूम में सड़ती रहती है।

काश ये हॉली-डे होमवर्क वाला नियम नहीं होता। अगर मैं प्रिंसिपल होती तो यह नियम रखती ही नहीं।

निशा गुप्ता, ग्यारहवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

स्कूल की यूनिफॉर्म का कलर बदल देना चाहिए। ये हरा तोते जैसा रंग अच्छा नहीं लगता। मिड डे मिल के स्वाद में बदलाव चाहिए, मेन्यू बदल दो। रोटी मिले तो बात बने। बदमाशी करने पर कभी-कभी जो मार पड़ती है, वो बन्द हो और मुर्गा बनने की सज़ा हो तो अच्छा है। इससे हमारा मनोरंजन होगा। स्कूल में हर रोज़ नए-नए गेम्स होने चाहिए। पढ़ाई में इससे मन लगता है। और स्कूल में जो भी पुरानी चीज़ें हैं, उन्हें निकाल फेंकें तो बहुत जगह खाली हो जाएगी।

राधेश्याम पाण्डे, चौथी, शहीद भगत सिंह प्राथमिक स्कूल, मनपा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

मुझे लगता है कि स्कूल में टीचर को मारना नहीं चाहिए क्योंकि इससे बच्चे कमज़ोर हो जाते हैं और पढ़ाई में ध्यान नहीं देते।।

अंजलि, मंज़िल संस्था, दिल्ली

मैं सबसे पहले स्कूल की ड्रेस बदलूँगी क्योंकि एक ही ड्रेस को बार-बार देखकर और पहनकर बोर हो जाते हैं। इसलिए मैं घर के अच्छे-अच्छे और नए-नए कपड़े पहनकर स्कूल जाना चाहूँगी।

भारती, वेलकम पेस सेंटर, निरन्तर संस्था, दिल्ली

मैं चाहता हूँ कि हमारे स्कूल का पार्क और बड़ा हो ताकि हम और खेल सकेंगे। और नए बच्चे स्कूल में आएँगे और उन्हें हम अपना दोस्त बनाएँगे। एक हॉकी ग्राउण्ड भी होना चाहिए। उसमें हम सारे दोस्त हॉकी खेलेंगे और टीचर के साथ भी खेलेंगे।

मनीष, पाँचवीं, एस.डी.एम.सी. प्राइमरी स्कूल, हौज खास, नई दिल्ली

मुझे स्कूल में एग्ज़ाम लिखना अच्छा नहीं लगता तो मेरे ख्याल से स्कूल में ओरल एग्ज़ाम लेना चाहिए। और स्कूल की छुट्टी जल्दी होनी चाहिए।

हुदा, पहली, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं एक सरकारी स्कूल में गई। मुझे वहाँ के नियम अच्छे नहीं लगे क्योंकि टीचर दस बजे आते हैं और बच्चे ग्यारह बजे आते हैं। टीचर बच्चों को पान मसाला खाने को मना करते हैं पर खुद उनसे पान मसाला मँगवाकर खाते हैं। मैं इसे बदलना चाहती हूँ क्योंकि पहले खुद को बदलना चाहिए।

रेखा, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अगर मैं स्कूल का कोई नियम बदल सकती तो मैं अपने स्कूल की नो-टच पॉलिसी को बदलती क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि जब कोई हमारी मदद करता है, तो हमें उसे गले लगाकर धन्यवाद करना चाहिए।

अन्वेषा पाटिल, तीसरी 'ए', द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

क्यों-क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-

प्रार्थना, गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र भी अनिवार्य भाग ले सकें। अक्सर बालिकाओं को ही प्रमुखता मिलती है और बालकों का विकास नहीं हो पाता। मैं इस नियम का सख्ती से पालन करवाता।

सौरभ, बारहवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, कैवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मैं अपने स्कूल का यह नियम बदलवाना चाहती हूँ कि हमारे यहाँ टाइम-टेबिल लिखवाया गया है फिर भी मैम कहती हैं कि सारी कॉपी-किताबें लेकर आनी हैं। जिसके पास स्कूटी या गाड़ी है उसका तो सही है, वह तो आराम से स्कूल जाएगा और आराम से घर आएगा लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उसकी तो हालत खराब हो जाएगी। या फिर किसी में ज़्यादा जान ना हो तो उसकी भी हालत खराब हो जाएगी।

इच्छा, चौथी, दीपलया कम्युनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली

हमें अपने स्कूल का जो नियम बदलना है वह नियम है कि एक पीरियड से तीन पीरियड तक तो 40 मिनट का पीरियड होना चाहिए लेकिन चौथे से लेकर छठे पीरियड तक 30 मिनट का होना चाहिए ताकि हम अन्य काम भी कर सकें, जैसे - कम्प्युटर चलाना, बुक पढ़ना, कॉपी की जाँच करना, वर्कशॉप रूम में कुछ काम करना एवं खेलना, शब्दकोश देखना आदि...।

पीयूष, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

यदि मुझे एक नियम बदलना हो तो मैं 'ना छूने का नियम' बदलना चाहूँगा कि ये नियम 'छूने का नियम' हो जाए।

अनाम, दूसरी 'बी', द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

हमारे स्कूल में मैडम पढ़ाती तो हैं लेकिन जो अच्छे बच्चे होते हैं उन्हें आगे बैठने को कहती हैं। और कमज़ोर बच्चे, वे बेचारे क्या करें। मैं यह नियम बदलना चाहती हूँ। क्योंकि वो कमज़ोर हैं तो उन्हें सारे बच्चों में नीचा दिखाया जाता है। क्या टीचर्स मेहनत करके कमज़ोर बच्चों को आगे नहीं बढ़ा सकते

सादिया, आठवीं, अरबिया पब्लिक स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

सभी स्कूलों में छोटे से लेकर बड़े बच्चे होते हैं। कई स्कूलों में कुछ ऊँचाई पर नल लगे होते हैं। इससे बड़े बच्चे तो पानी पी लेते हैं पर छोटे बच्चे नहीं पी पाते। छोटे बच्चों को दिक्कत होती है। उन्हें किसी की मदद लेनी पड़ती है और उन्हें पानी बाद में मिलता है। क्यों ना नल को ऊँचाई के घटते क्रम में लगाया जाए ताकि छोटे व बड़े सभी बच्चे आसानी से पानी पी सकें।

सुधीर, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मैं अपनी पसन्द का विषय जब मन चाहता तब पढ़ने की आज़ादी देता और खेलने की भी। मुझे लगता है कि खेलने से विकास होता है।

आयन मेहरा, तीसरी 'ए', द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

हमारे स्कूल में टिफिन लाना मना है। पर मुझे लगता है कि हमें टिफिन लाना चाहिए क्योंकि कई बार हमें स्कूल का खाना अच्छा नहीं लगता। तो हमें अपने मन का खाना लाना चाहिए। इससे स्कूल का खाना बचेगा और सब अपने मन का भोजन करेंगे।

सौरभ ध्रुव, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मैं एक नियम बदलूँगा। किसी भी बच्चे को कोई फीस न देनी पड़े। फीस न दे पाने की वजह से कई बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं। नया महीना लगते ही चिन्ता सताती है कि पन्द्रह तारीख को फीस देनी है। ये टेंशन तो दूर होगी।

रोहित, बारहवीं, नवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, कैवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

क्यों? क्यों-क्यों? क्यों-क्यों?

मैं पाँचवीं में पढ़ता हूँ। स्कूल के बाद एक गैराज में काम सीख रहा हूँ। स्कूल का टाइम 1 अक्टूबर से बदल गया है। अब छुट्टी 3 बजे के बाद होगी। तो, मैं गैराज पर कैसे जा पाऊँगा यह नियम ठीक नहीं है।

दुर्गेश यादव, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धुसाह प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हमारे स्कूल में नियम है कि यहाँ चिल्लाना नहीं है। अगर हम चिल्लाएँगे नहीं तो हमारी आवाज़ सुरीली कैसे होगी और हमारे अगल-बगल में मेरे फैन मतलब मेरे अगल-बगल में लोग नहीं घूमेंगे और मैं हीरोपंथी नहीं दिखा पाऊँगा। इसलिए मैं यह नियम बदलना चाहता हूँ।

आर्यन बारसे, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मैं आई-डी कार्ड पहनने का नियम बदलना चाहता हूँ क्योंकि आई-डी कार्ड मेरे गले में अटकता है।

नीरज, दूसरी 'सी', द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

मैं यह नियम बदलना चाहती हूँ कि हर स्कूल पर से इंग्लिश मीडियम और हिन्दी मीडियम नाम हटा दिए जाएँ ताकि इंग्लिश मीडियम में पढ़ने वाले सभी स्कूलों के बच्चे प्राइमरी स्कूल के बच्चों यानी हिन्दी मीडियम के बच्चों को देखकर ना चिढ़ें, ना ही उन्हें गन्दा कहें।

जहीन सलमानी, आठवीं, सहीरा पब्लिक स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

एक साल में बावन सप्ताह होते हैं। इस हिसाब से कम से कम तीस-चालीस अलग-अलग प्रार्थनाएँ होनी चाहिए। प्रार्थनाओं की कमी है और प्रातःकालीन सभा बोरिंग हो जाती हैं। कुछ बच्चों को मौका नहीं मिल पाता।

सुमन, बारहवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, कैवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

कहानी पूरी करो

सजिता नायर

आदि ने जैसे ही आँखें खोलीं वह हड़बड़ाकर उठी। यह तो उसका घर नहीं था! उसके घर से दिखने वाला समुद्र भी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। इस कमरे की दीवारें गीली बोरियों से बनी हुई थीं। उसके सामने वाली दीवार का दरवाज़ा खुला था। उससे एक रास्ता अँधेरे की तरफ कहीं जा रहा था। आदि ने उस दरवाज़े की तरफ कदम बढ़ाया ही था कि उसकी नज़र दूसरे दरवाज़े पर पड़ी। दरवाज़े के सामने एक विशालकाय गदाधारी इन्सान-जानवर किसी की रखवाली कर रहा था। उसी दरवाज़े की चौखट पर चोगा पहने हुए एक छोटा-सा एलियन कुछ बुदबुदाता-बड़बड़ाता इधर-उधर चले जा रहा था। इससे पहले कि आदि कुछ समझ पाती वहाँ...

गणित है मज़ेदार

चलो इस बार टैनग्रैम की एक पहेली आज़माते हैं। टैनग्रेम एक ऐसा खेल है जिसमें 7 आकृतियाँ (टैन) दी जाती हैं। इन सात आकृतियों से तुम्हें नई-नई आकृतियाँ बनानी होती हैं। कहते हैं कि 700 साल से भी पहले इस खेल का आविष्कार चीन में हुआ था। टैनग्रैम का आधार तो गणित ही है, लेकिन ये पहेलियाँ ज़्यादातर मनोरंजन के लिए इस्तेमाल होती हैं।

नीचे सात टैन दिए गए हैं। क्या तुमने अपनी ज्यामिती (रेखागणित) की क्लास में इनके बारे में जाना है?

एक ट्रेसिंग पेपर लो और सातों आकृतियों को उस पर बना लो। इन्हें कैंची से काट लो और फिर इन सातों आकृतियों को इस तरह जोड़ो कि एक बड़ा चौकोर बन जाए।

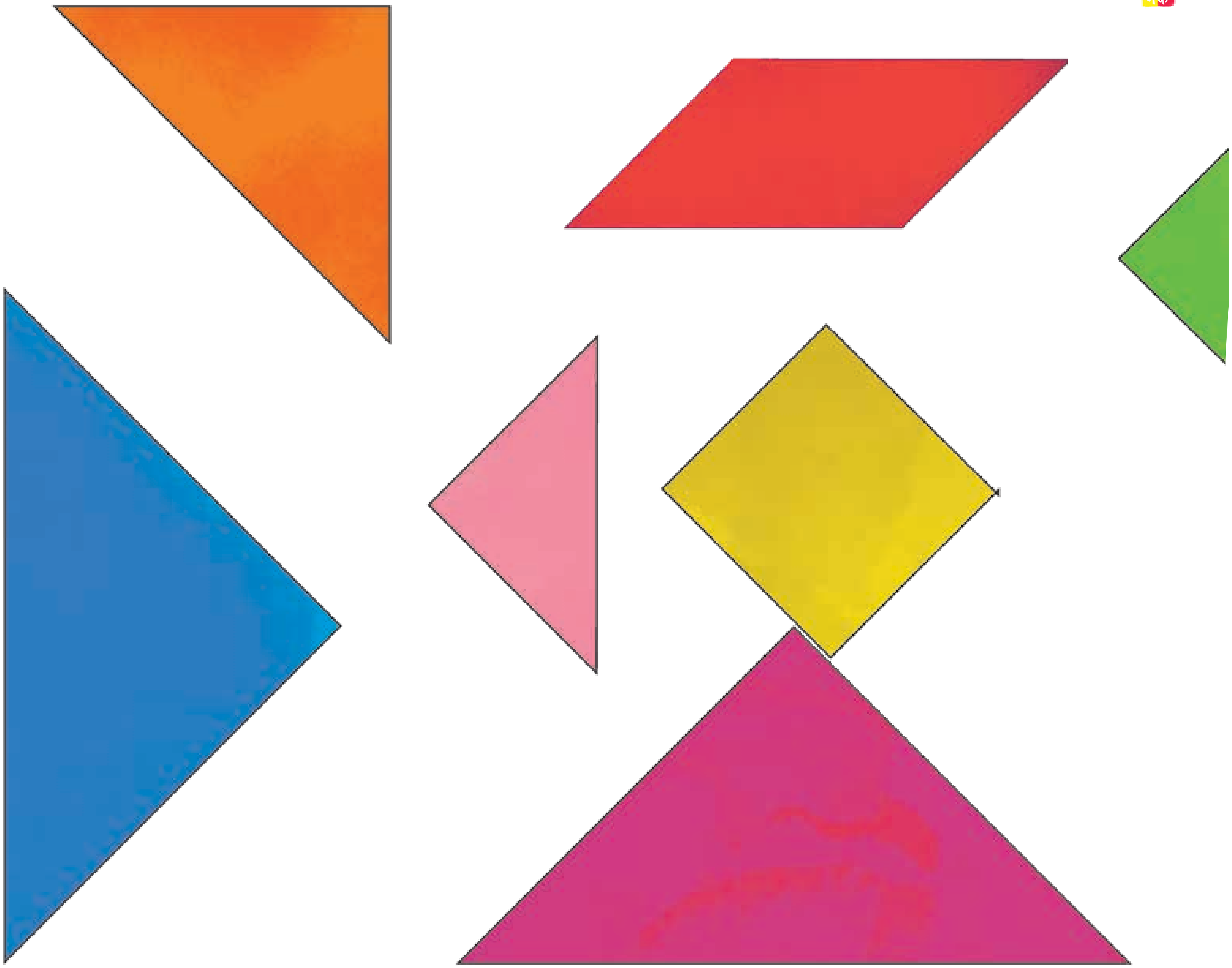

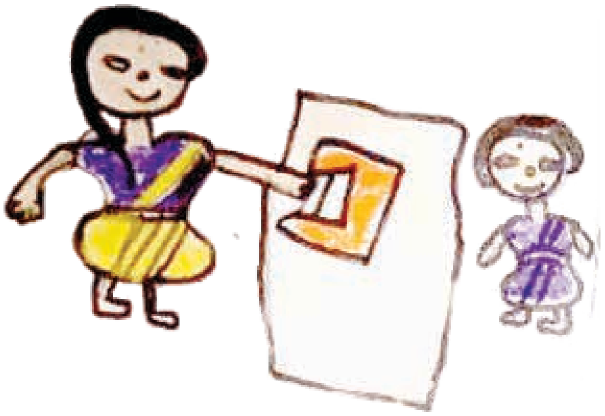

दो प्रेस वाली दुर्गा दीदी

चित्र व कहानी: रुचिका
चौथी, शहीद स्कूल, रायपुर, छत्तीसगढ़

दुर्गा दीदी प्रेस चलाने का काम करती हैं। वो प्रेस को अपने बाएँ हाथ से चलाती हैं। एक दिन उनके बाएँ हाथ की हड्डी खिसक गई।

उनके हाथ में बहुत दर्द था। कुछ दिन तक वो बिस्तर पर लेटी रहीं। मगर घर में पैसा कम पड़ने लगा तो दुर्गा दीदी ने काम नहीं बन्द किया।

वो अपने दाएँ हाथ से प्रेस करने लगीं। धीरे-धीरे यह उनकी आदत बन गई।

कुछ दिन बाद उनका बायाँ हाथ भी ठीक हो गया तो वो दोनों हाथ से प्रेस करने लगीं... और बन गईं वो दो प्रेस वाली दुर्गा दीदी।

कोकड़ाल

प्रीति जगत

चित्र: कनक शशि

हम रोज़ की तरह लकड़ी बीनने मुर्गी फार्म गए थे। मुकेश, ईश्वर, गोविन्द अपनी गुलेल से चिड़ियों को मार रहे थे। जब उन्होंने कोकड़ाल (बगुला) मारा तो हम लोग बहुत खुश हो गए कि आज तो कोकड़ाल खाने को मिलेगा। ईश्वर ने कहा कि चलो, कोकड़ाल को छीलकर साफ करते हैं। गोविन्द ने कहा, "इसको भूँजेंगे और सभी मिलकर खाएँगे।" कोकड़ाल खाने में छाँटन (मुर्गी की आँतें, चमड़ी आदि) से भी अच्छा लगता है। मुकेश ने कुछ कबूतर भी मारे थे। उसने कहा कि मैं इन कबूतरों को बेचूँगा और उन पैसों से पैंट और कुरता खरीदूँगा।

मुकेश ने कोकड़ाल भूँजने के लिए दिया। ईश्वर ने कहा कि ये देखो इसको कहते हैं कोकड़ाल, जो सफेद रंग का होता है। गीता ने कहा कि इसकी गर्दन तो बहुत लम्बी है और बाल भी पूरे सफेद रंग के ही हैं। गोविन्द ने कहा कि इसकी चोंच भी तो देखो, कैसी हलके पीले रंग की है। मैंने कहा कि मुझे भी तो दिखाओ कितना बड़ा होता है। ईश्वर ने कहा कि पकड़कर तो देख। मैंने उसको पकड़ा तो वह बहुत ही सॉफ्ट-सा था। ईश्वर ने आग जलाते हुए कहा कि मैं सबसे ज़्यादा खाऊँगा क्योंकि मैं ही साफ कर रहा हूँ। ईश्वर रेजर (ब्लेड) से कोकड़ाल को काट रहा था और दिखा रहा था कि लो

देखो यह इसका दिल है, ये इसकी आँतें और कलेजा है। मैंने कहा कि इत्ता छोटा-सा दिल है। दगोली ने कहा कि कितना छोटा कलेजा है। और इसकी आँतें भी कितनी छोटी हैं। दुर्गा ने कहा कि यह सब बिलकुल अपने जैसे ही होते हैं। ईश्वर ने कहा कि सब कुछ ऐसा ही होता है, पर इन्सान में बाटसकाय नहीं होता है। इन्सान में बड़ी-बड़ी आँत होती है, और कोकड़ाल और मुर्गी में बाटसकाय होता है।

गुंजा ने कहा कि कितनी लम्बी चोंच है। ईश्वर ने पूछा कि ये दिल और कलेजा कौन खाएगा? मैंने तो कोई जवाब नहीं दिया पर कविता ने कहा कि इसको फेंक दो। फिर कविता ने आग जलाई और आग में कोकड़ाल को भूँजने लगे तो उसकी खुशबू आने लगी। ईश्वर ने कोकड़ाल को बहुत अच्छे-से भूँज दिया और सब ने मिलकर कोकड़ाल खाया। फिर सबने कहा कि कोकड़ाल कितना टेस्टी था। कल और कोकड़ाल को गुलेल मारना ताकि हम फिर से उसे खा सकें।

मुकेश ने कबूतरों को बिन्दिया को बेच दिया और उसे अच्छे पैसे भी मिल गए और बिन्दिया ने भी कबूतरों की सब्ज़ी मस्त टेस्टी बनायी थी। मुकेश ने भी उन पैसों को अपनी दाई (माँ) को जमा कर दिया ताकि फिर से और कबूतर पकड़कर बेच सके।

किताबें कुछ कहती हैं...

पुस्तक समीक्षा

किताबों की दुनिया में जाने का एक रास्ता है किताबों की समीक्षाएँ। इस बार हमने कुछ बच्चों से पूछा कि अपनी मनपसन्द किताबों के बारे में वे क्या सोचते हैं हमें लिख भेजें। इनमें से कुछ हम यहाँ छाप रहे हैं।

तुमने भी अगर कोई किताब या कोई कहानी-कविता वगैरह पढ़ी हो और उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहो तो हमें लिख भेजना। क्या अच्छा लगा और क्या अच्छा नहीं लगा... हम तुमसे सुनना चाहेंगे।

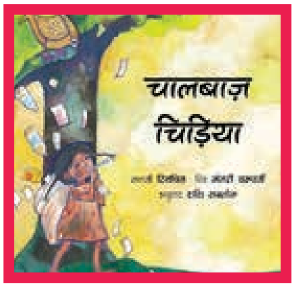

चालबाज़ चिड़िया

लेखक - रिनचिन

समीक्षा : अमन सिसौदिया, पाँचवीं

मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

चालबाज़ चिड़िया कहानी मुझे बहुत अच्छी लगी क्योंकि यह कहानी हमारे बारे में है। हमारे समाज की कहानी है। मुझे यह अच्छा लगा कि रेंचु हमारी ही तरह पन्नी बीनने जाती है और कबाड़ बेचती है। और उसके दादा हमारे दादा की तरह तीतर-बटेर पकड़ने जाते हैं। तीतर-बटेर का माँस बहुत स्वादिष्ट होता है।

मैंने तीतर-बटेर खाया है पर अब यह बहुत मुश्किल से मिलता है। चालबाज़ चिड़िया में रेंचु के दादा हिरन के सींग से बनी बाँसुरी से तीतर पकड़ते हैं। और मेरे दादा खंदाड़े से पकड़ते हैं।

इस कहानी में मुझे ये अच्छा लगा कि बिना माँ के बताए 24 मेहमानों के लिए एक लड़का और एक लड़की बिरयानी बनाते हैं। लड़का और लड़की दोनों भाई-बहन थे। भाई अपनी बहन की मदद से बहुत ही स्वादिष्ट बिरयानी बनाता है। जब उनके यहाँ मेहमान आते हैं तो उनकी माँ देखकर हैरान हो जाती हैं क्योंकि उनको पता नहीं था कि मेहमान आनेवाले हैं। उनकी माँ बिरयानी बनी देखकर बहुत खुश हो जाती हैं और दोनों बच्चों को गले लगा लेती हैं।

दम दमादम बिरयानी

लेखर - गायत्री तीर्थपुरा

समीक्षा : सहीदुन निशा, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मीता और उसके जादुई जूते

लेखक - बी जी गुज्जरप्प

समीक्षा : मनीष, पाँचवीं, एस.डी.एम.सी. प्राइमरी स्कूल, हौज खास, नई दिल्ली

मुझे मीता और उसके जादुई जूते की किताब बहुत अच्छी लगी क्योंकि मीता रोज़ उड़ने के सपने देखती थी। मुझे भी उड़ने का बहुत शौक है पर मैं उड़ नहीं पाता। पर उस लड़की के पास उड़ने वाले जादुई जूते थे।

नाचघर

लेखक: प्रियम्वद

समीक्षा : युवराज सिंह, नवीं
बाल भवन किलकारी
पटना , बिहार

"मोहसिन हँसा। पता नहीं किस पर। दूर्वा हँसी। पता नहीं किस पर। पीछे अकेला छूटा रह गया नाचघर भी हँसा। पता नहीं किस पर।"

इन खूबसूरत पंक्तियों के पीछे छिपी एक शुरुआत या कहानी या फिर आहिस्ता-आहिस्ता सी चलती एक मीठी-सी दुनिया, कानपुर शहर की गलियाँ, गंगाघाट, दरगाह के गुम्बद, अज़ान की आवाज़ें और नाचघर। प्रियम्वद की कलम से निकली या उनके जादुई हाथों से बुनी गई इस किताब के हर शब्द से मेरा लगाव कभी टूटने से रहा। लौट-लौटकर इस किताब को पढ़ना कितना सुन्दर लगता है। यह किताब धीमी रफ्तार से सुबह और शामों के बीच गंगा के मीठे पानी की ठण्डक और ओस की ताज़गी को महसूस कराती है। हर दृश्य को जीकर देखते हुए पढ़ने के बीच एक आह निकल ही जाती है।

मेरे प्रिय उपन्यासों में *नाचघर* को मैंने सबसे ऊपर रखा है। इस किताब के कई हिस्से मेरी जुबान से नहीं उतरते। इनमें से कुछ हैं:

सन 1600 की आखिरी रात के आखिरी घण्टे बचे थे। उसी समय जब नया साल धरती पर उतरने के लिए सज-सँवर रहा था। और शेक्सपियर हैमलेट लिख रहा था और आगरा के लालकिले में अकबर गहरी नींद सो रहा था रानी एलिज़ाबेथ ने सामने रखे कागज़ पर शाही मुहर मार दी। उसी के साथ इस मुल्क की किस्मत बदलने वाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जन्म हो गया।

नाचघर हमें अपने अमर हो चुके पात्रों की अद्भुत कहानी बताता है। मोहसिन और दूर्वा की दोस्ती के बीच कोई तीसरा जो उन्हें उनसे ज़्यादा चाहता था, वो नाचघर था। वही जो पूरी कहानी में लिल्ली घोड़ी की नाच की धमक से जागता रहा। वही जो हमारे बचपन का एक खूबसूरत और बेहतरीन तोहफा है। दोस्ती, प्यार, भाईचारे और ईश्वर की दुआओं से मोहसिन की माँ के हाथों करा दी गई एक छोटी-सी दुनिया जिसकी गहराई बहुत ही सुन्दर है, वही नाचघर...।

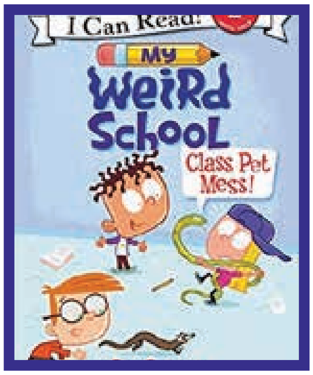

माई वियर्ड स्कूल, क्लास पेट मेस

लेखक : डेन गटमैन

समीक्षा : अनाहिता यादव, तीसरी, द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

इस किताब के कवर ने मुझे इस किताब को पढ़ने की रुचि जगाई क्योंकि किताब के टाइटल का फोंट उतना ही वियर्ड (अनोखा) है जितना कि इस किताब का टाइटल 'वियर्ड' है। इस पर दो लड़के व एक लड़की का चित्र बना है। एक लड़का अपने पेट फेरेट के पीछे भाग रहा है और दूसरा लड़का लड़की को कुछ बता रहा है। लड़की इस्टर्न हॉगनोज़ स्नेक को किसी तरह सँभालने की कोशिश कर रही है। आखिरी कवर पर सार दिया है और किताब किस लेवल के बच्चों के लिए है यह भी दिया है। पहले पन्ने में मम्मा-पापा के लिए नोट दिया है कि किस तरह वो बच्चों को अच्छी तरह पढ़ने में मदद कर सकते हैं। इस किताब के चित्रों ने ही मुझे इसे पढ़ने के लिए आकर्षित किया क्योंकि किताब के चित्र एकदम ज़बरदस्त हैं। साँप और लड़की की वजह से मुझे इसकी कहानी बड़ी मज़ेदार लगी। किताब में 32 पन्ने हैं और कागज़ थोड़ा रफ है। अगर यह किताब थोड़ी मोटी होती तो और अच्छा होता।

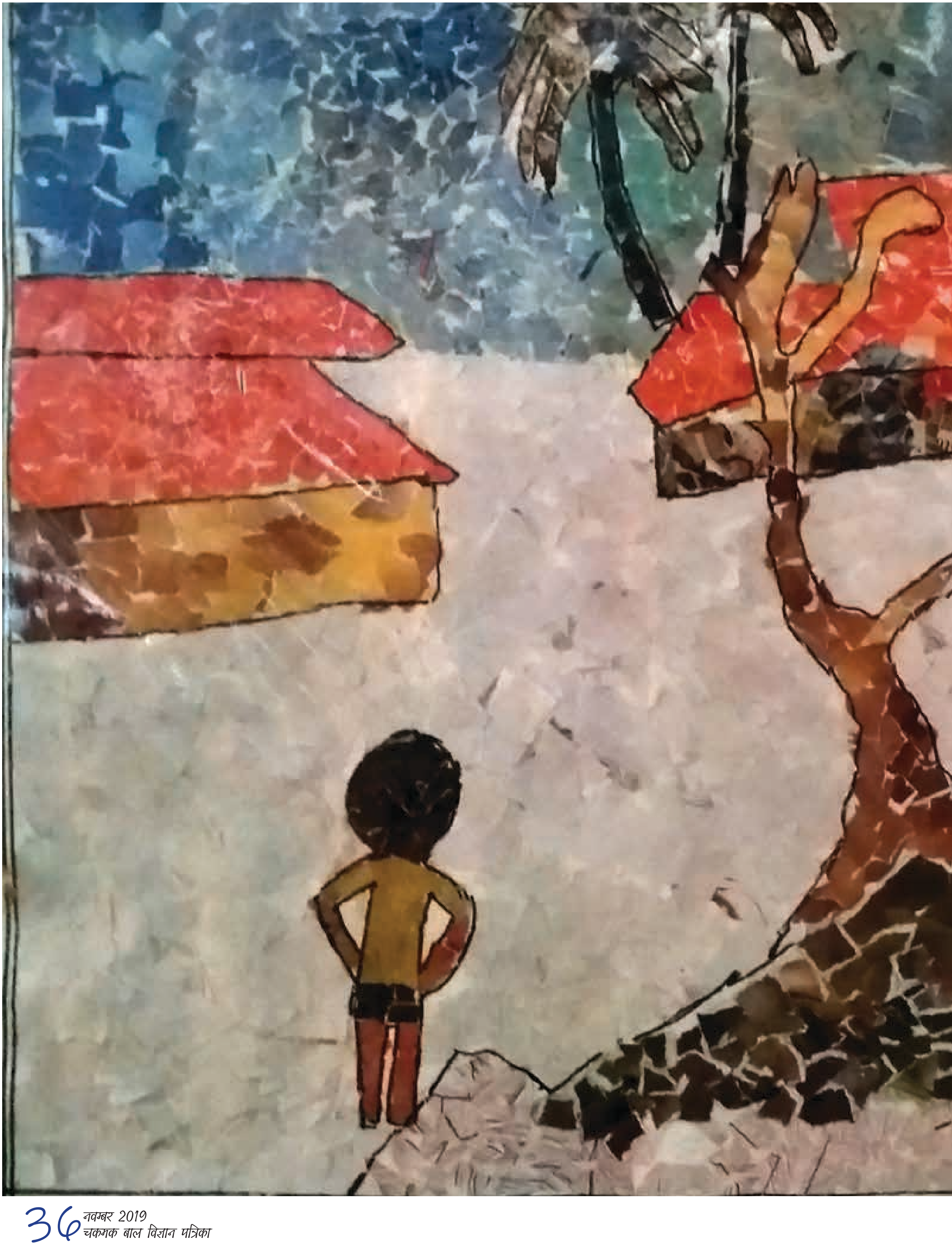

अनाम, आनन्द निकेतन स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

एक-सी दिखने वाली इन फोटो में कुछ अन्तर हैं, क्या तुम उन्हें ढूँढ सकते हो?

सुडोकू-25

	5	4		6			2	
8	2	3	1				7	6
6	9			3	5	8	4	1
	4		6	8	2			
7	8					9	6	
	6	2	9	7				8
	1			2		7	8	4
	7		5				9	
	3	6	7				1	

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

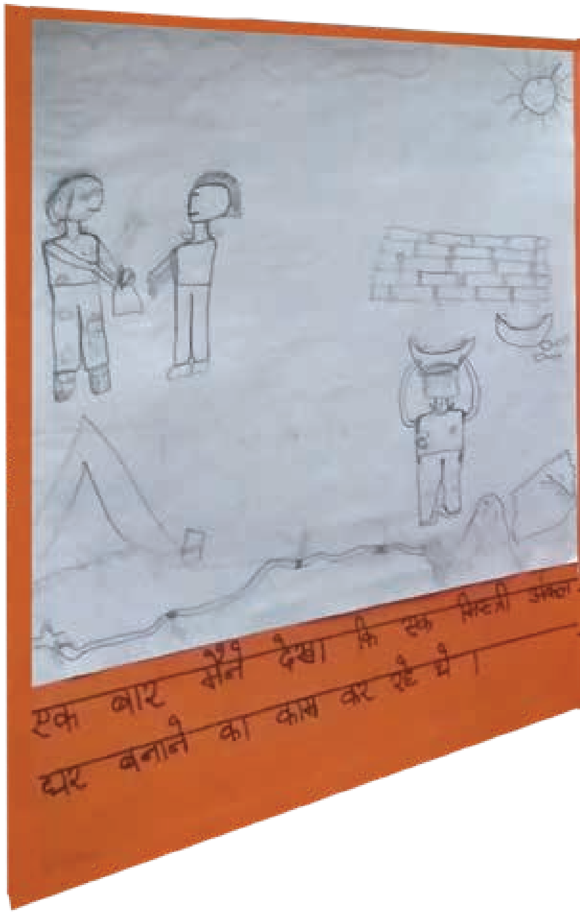

अन्तर ढूँढो

चित्र: शिवात्मिका लाला

देव, मनीष, कृतिका व सुरेन्दर, एस.डी.एम.सी. प्राइमरी स्कूल, हौज खास, नई दिल्ली

तुम भी जानो

एक कलाकार की शरारत

यूनाइटेड किंगडम के कलाकार 'बैंक्सी' दुनिया भर में मशहूर हैं। ये दीवारों और सड़कों पर चित्र बनाते हैं और इनके चित्र अक्सर व्यंग्यात्मक होते हैं। ये राजनैतिक एक्टिविस्ट, उग्रवादी और फिल्म निर्देशक भी हैं। लेकिन कोई भी इन्हें पहचानता नहीं है। ये कभी दुनिया के सामने नहीं आए हैं।

हाल ही में इनकी एक पेंटिंग 14 लाख पाउण्ड में नीलाम हुई। लेकिन नीलाम होते ही यह पेंटिंग अपने फ्रेम से नीचे खिसककर सबके सामने ही कतरा-कतरा हो गई। यह देखकर नीलामी में बैठे कलाप्रेमी व ग्राहक भी सकते में आ गए। पर ये बैंक्सी की ही शरारत थी। कोई और कलाकार होता तो उस पेंटिंग की कीमत शून्य हो जाती। लेकिन कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि अब उस पेंटिंग की कतरन की कीमत 14 लाख से भी ज़्यादा होगी।

देसी अंग्रेज़ी शब्द

हर साल ऑक्सफर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में अंग्रेज़ी में ज़्यादा इस्तेमाल होने वाले कई नए शब्द शामिल किए जाते हैं। इन शब्दों का इतना ज़्यादा इस्तेमाल हुआ होता है कि ये मान सकते हैं कि वे अंग्रेज़ी का हिस्सा बन चुके हैं। ये अंग्रेज़ी के स्लैंग शब्द हो सकते हैं। यानी कि ऐसे स्थायी, अनौपचारिक शब्द जो ज़्यादातर बोलचाल में इस्तेमाल होते हैं। जैसे 'डिग' यानी किसी चीज़ को पसन्द करना। ये अंग्रेज़ी में गढ़े गए नए शब्द भी हो सकते हैं, जैसे 'फेक न्यूज़'। ऐसे शब्द जो पिछले दस साल में बोले जा रहे हैं। और ये अन्य भाषाओं के ऐसे शब्द भी हो सकते हैं जिनका इस्तेमाल अंग्रेज़ी में प्रचलित हो गया है।

इस साल शामिल हुए नए अंग्रेज़ी शब्दों में से एक है - chuddies (चड्डीज़ - अंग्रेज़ी में चड्डी का बहुवचन)। इस शब्द का इस्तेमाल ब्रिटेन में देसी समुदाय के युवा दशकों से कर रहे हैं। अब तक 1000 से भी ज़्यादा देसी भाषाओं के शब्दों जैसे बापू, अब्बा, गुलाब जामुन, दाल इत्यादि को इस शब्दकोश में जगह मिल गई है।

घुड़सवार लाइब्रेरियन

1935 में अमेरिका के कैन्टकी प्रदेश में लोगों तक किताबें पहुँचाने की एक योजना बनी। मकसद था प्रदेश के पूर्वी इलाके में सुदूर जगहों पर रहने वाले लोगों को पढ़ने का मौका देना। यह इलाका उत्तर प्रदेश जितना बड़ा था। पर यह काम बिलकुल भी आसान नहीं था। एक तो पहाड़ी इलाका और फिर दूर-दूर तक बसेरा न मिलना। पर किताबें हर हाल में पहुँचानी थीं। तो, इन मुश्किलों के बावजूद कई महिलाओं ने यह काम अपने हाथ में लिया। वे अपने घोड़ों पर सवार होकर हफ्ते में 200 किलोमीटर तक का सफर करतीं। घोड़े पर सवार इन महिलाओं को जब लोग शक की नज़रों से देखते, तो पहले वे बाइबल से कुछ पढ़तीं। उस समय तक बाइबल मौखिक रूप से ही पढ़ाई जाती थी। किताब देखकर लोगों का भरोसा बनता और वो अन्य किताबें भी स्वीकारते। ये सिलसिला दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत तक चलता रहा। और फिर 1943 में यह योजना बन्द हो गई।

? माथापच्ची

1. क्या तुम्हें इस चित्र में कोई गलती नज़र आ रही है?

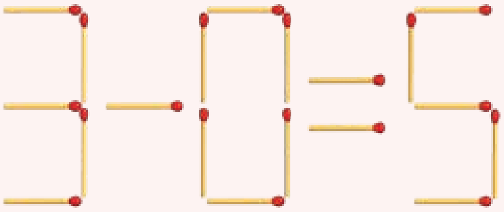

2. क्या तुम माचिस की दो तीलियाँ जोड़कर इस समीकरण को सही कर सकते हो?

3. क्या तुम एक चौकोर और एक आयत बनाकर गिलहरियों को सुपारियों से अलग कर सकते हो?

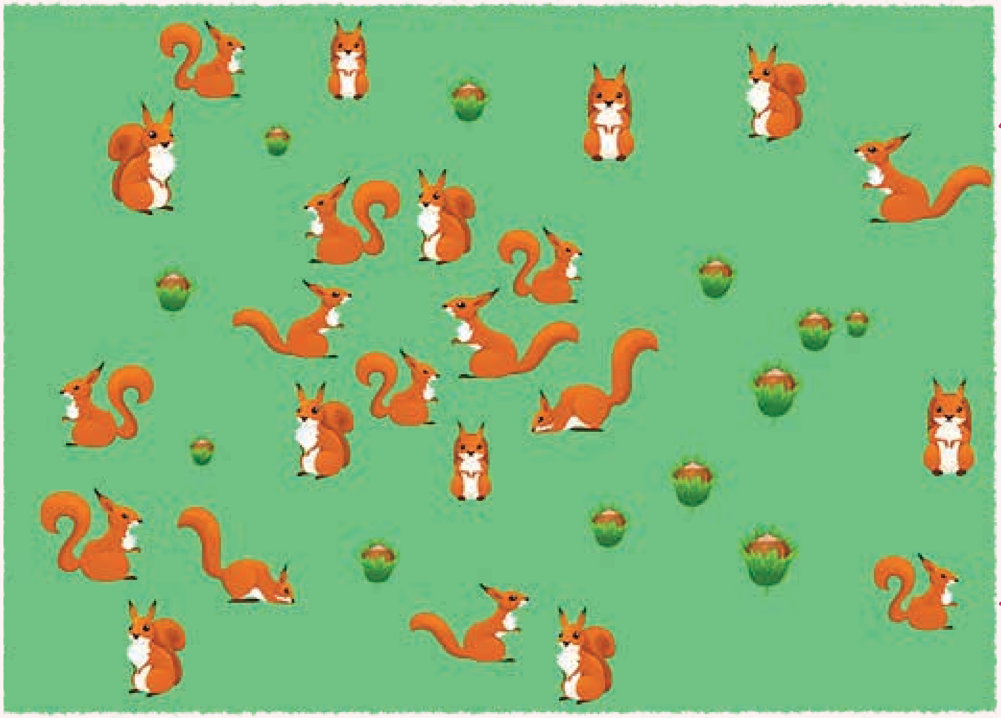

4. दो दोस्त पिक्चर देखने जाते हैं। एक व्यक्ति का टिकट 50 रुपए है। उनमें से एक जाकर टिकट काउंटर पर 100 रुपए देता है। काउंटर पर बैठा व्यक्ति बिना कुछ पूछे व बिना उसकी ओर देखे ही उसे 2 टिकट दे देता है। उसे कैसे पता कि उन्हें दो टिकट चाहिए?

5. एक आदमी के हाथ में छह उँगलियाँ थीं। लोग उसे अकबर कहकर बुलाते थे। क्यों?

फटाफट बताओ -

एक बार भोजन करो तो, झटपेट तुम्हें खिलाऊँ
अगर दुबारा मुझको चाहो, तो काम नहीं मैं आऊँ

(पत्तल)

रोज़ काटो चकाचक,
फिर भी उगे फटाफट।

(बाल)

क्या है जो गर्म होने पर जम जाता है?

(अंडा)

माथापच्ची जवाब

1. हिन्दी व अंग्रेज़ी में जुर्माने की रकम अलग-अलग लिखी है।

2.

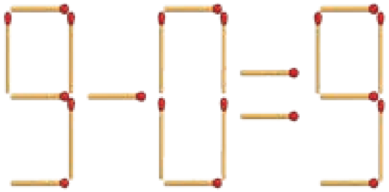

3.

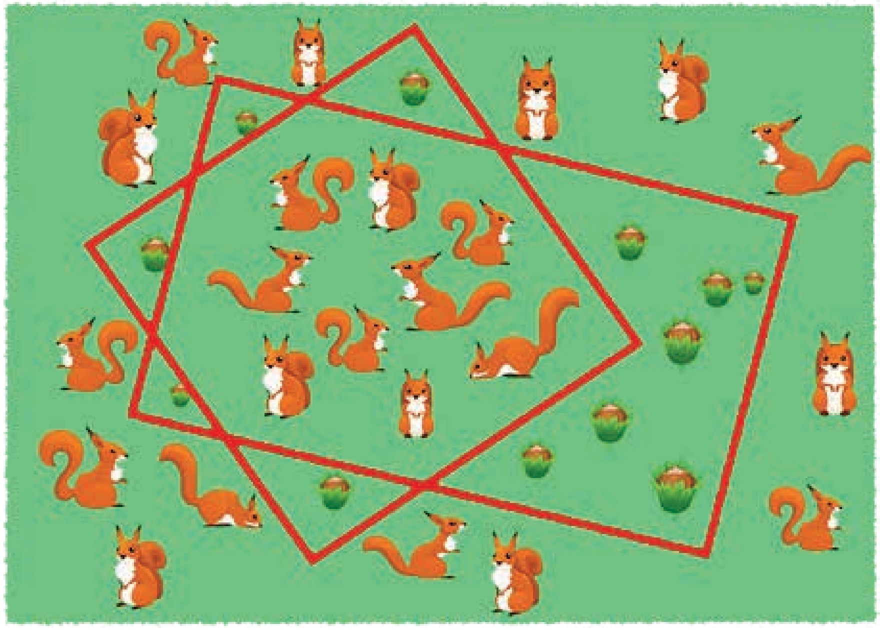

4. क्योंकि उसने 50 रुपए के दो नोट दिए थे। इससे काउंटर पर बैठा व्यक्ति समझ गया कि उसे दो टिकट चाहिए। यदि एक ही चाहिए होता तो वो 50 का एक ही नोट देता।

5. क्योंकि अकबर उसका नाम था।

अक्टूबर की चित्र पहेली का जवाब

1ब	स	2अ	ड्डा		3गा		4बै	5ग
त्ती		ख		6चा	य			ठ
	7मो	बा	इ	ल		8छ	त	री
9बि		र		10क	11क	ड़ी		
छौ			12धो		न		13टि	न
14ना	15श	पा	ती		प		क	
	र			16पे	टी	17को	ट	
18	ब		19चो	टी		य		20सी
	21त	म	गा		22ठे	ला		ट

सुडोकू-24 का जवाब

2	9	5	4	6	7	3	8	1
6	3	4	8	5	1	2	9	7
7	1	8	2	9	3	4	6	5
9	2	3	1	8	5	6	7	4
8	6	1	3	7	4	9	5	2
4	5	7	6	2	9	8	1	3
1	7	2	9	4	6	5	3	8
5	8	6	7	3	2	1	4	9
3	4	9	5	1	8	7	2	6

भूलभुलैया का जवाब

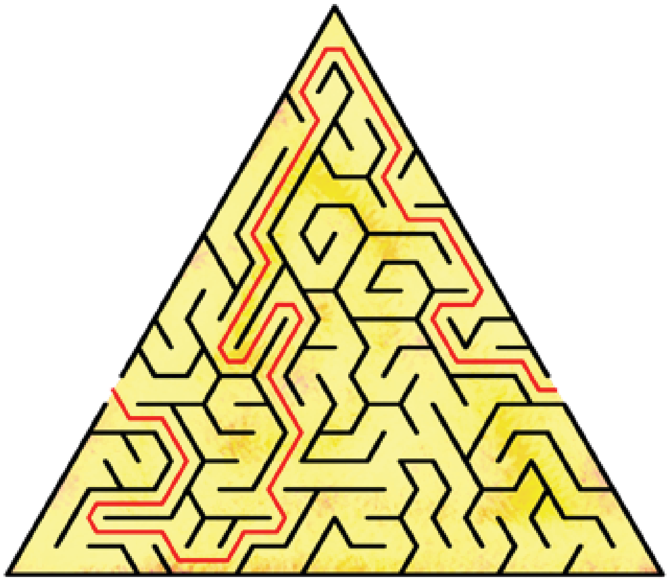

अन्तर ढूँढो का जवाब

गणित है मज़ेदार का जवाब

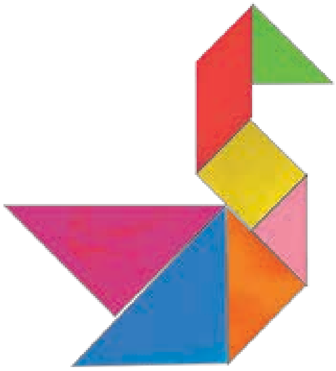

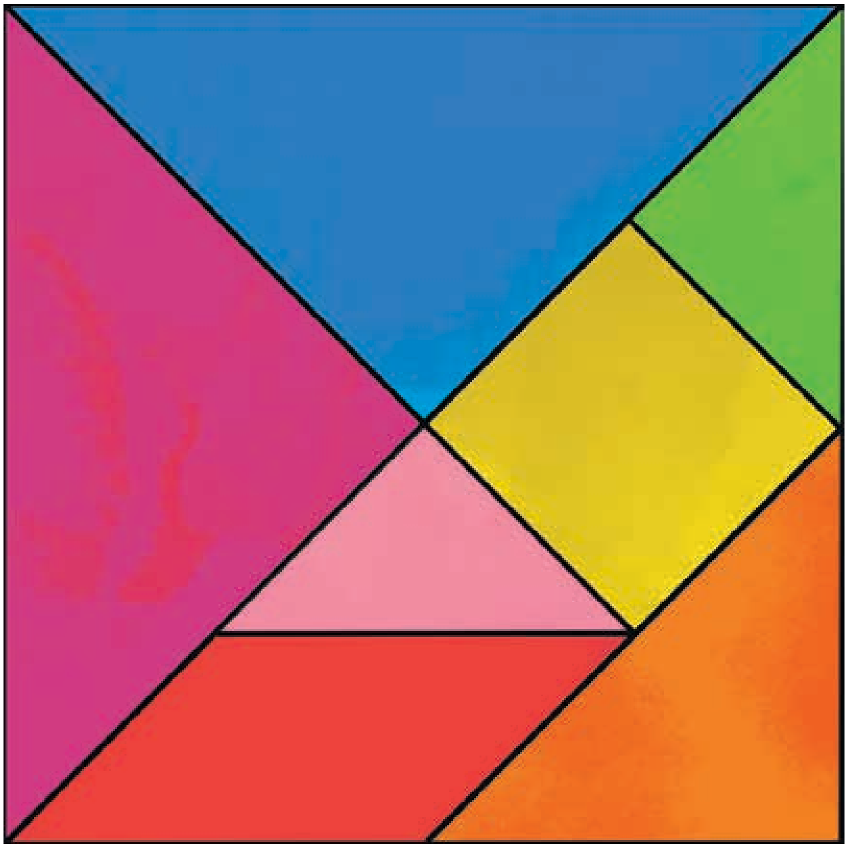

गुड़हल की प्रतियोगिता के विजेता

गुड़हल के फूल की प्रतियोगिता के लिए हमें कई जवाब मिले। गुड़हल को अपनी भाषा में क्या कहते हैं, इसके कई जवाब आए। तुम में से कइयों ने नामों की एक सूची भी भेजी। कुछ बच्चों ने चित्र बनाकर भी भेजा। कुछ जवाबों में गुड़हल के अलग-अलग उपयोग का भी ज़िक्र पढ़ने को मिला लेकिन फील्ड डायरी के नोट्स किसी ने नहीं भेजे। हम चाहते हैं कि तुम बाहर कुछ समय बिताकर हमें बताओ कि तुमने क्या देखा और उसके बारे में तुम क्या सोचते हो। अगली बार ऐसा ज़रूर करना और हमें लिख भेजना।

गुड़हल की प्रतियोगिता के विजेता हैं - अभिमान वत्स, शिवांशु वर्मा और ऐशानी भार्गवी। सभी विजेताओं को ईनाम के तौर पर जल्द ही एक किताब भेजी जाएगी। ताब - जल्द ही भेज देंगे।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

सेम टू सेम

दिविक रमेश
चित्र: हबीब अली

मम्मी अगर मैं बन्दर जैसा
जम्प करूँ जो सेम टू सेम?
और अगर मैं बकरी जैसा
में-में बोलूँ सेम टू सेम?

बोलो मम्मी डॉगी जैसा
प्यार लड़ाऊँ सेम टू सेम?
और गाय-सा बड़े प्यार से
जो रम्भाऊँ सेम टू सेम?

अगर मैं बनकर इक गिलहरी
दाना खाऊँ सेम टू सेम?
अगर फूल-सा बनकर मैं भी
जो मुस्काऊँ सेम टू सेम?

बुरा नहीं मानो तो बेटा
रट छोड़ो अब सेम टू सेम।
क्या कहीं से सीख के आए
नया-नया तुम सेम टू सेम।

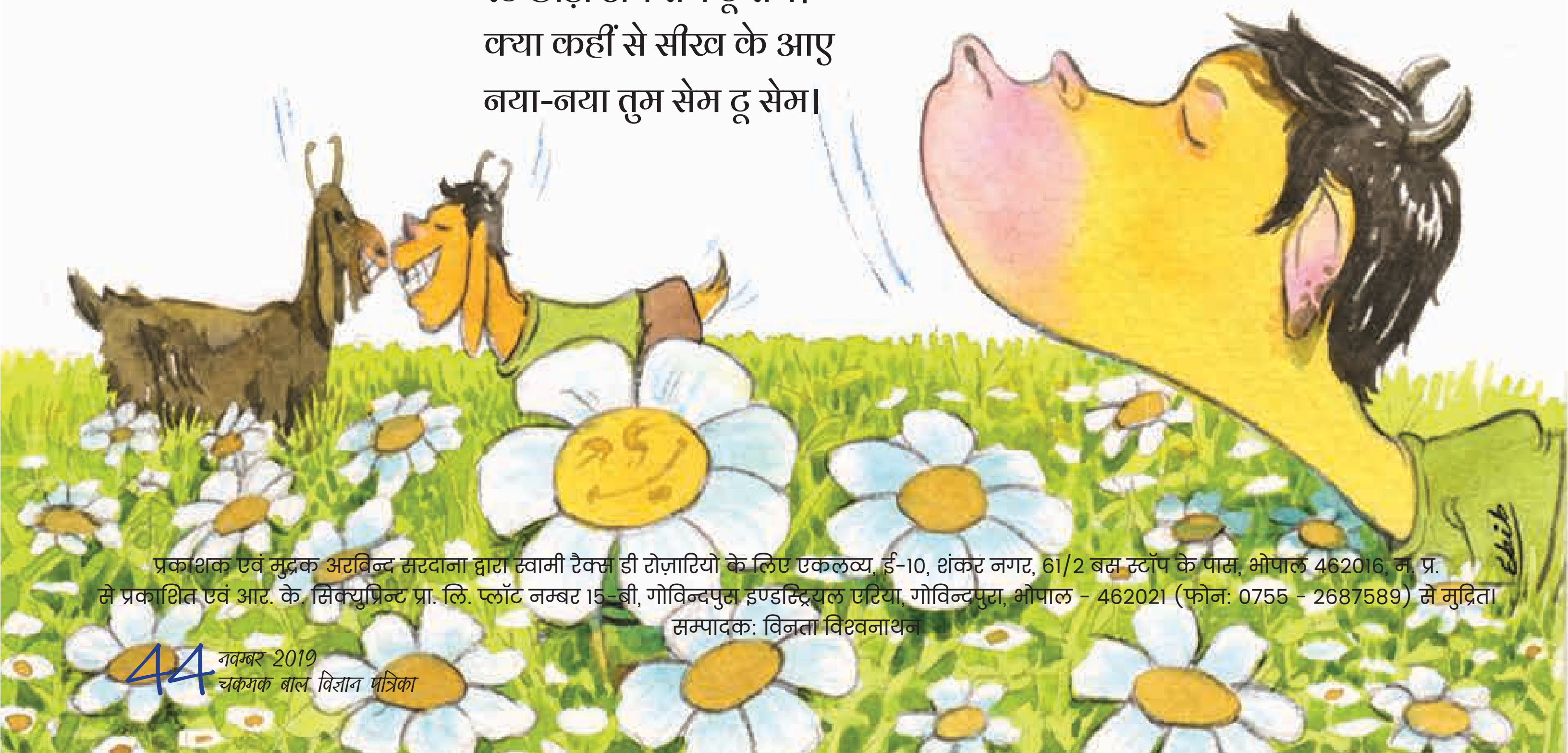

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन